सत्रहवाँ अंक
2018

वन्दे मातरम्

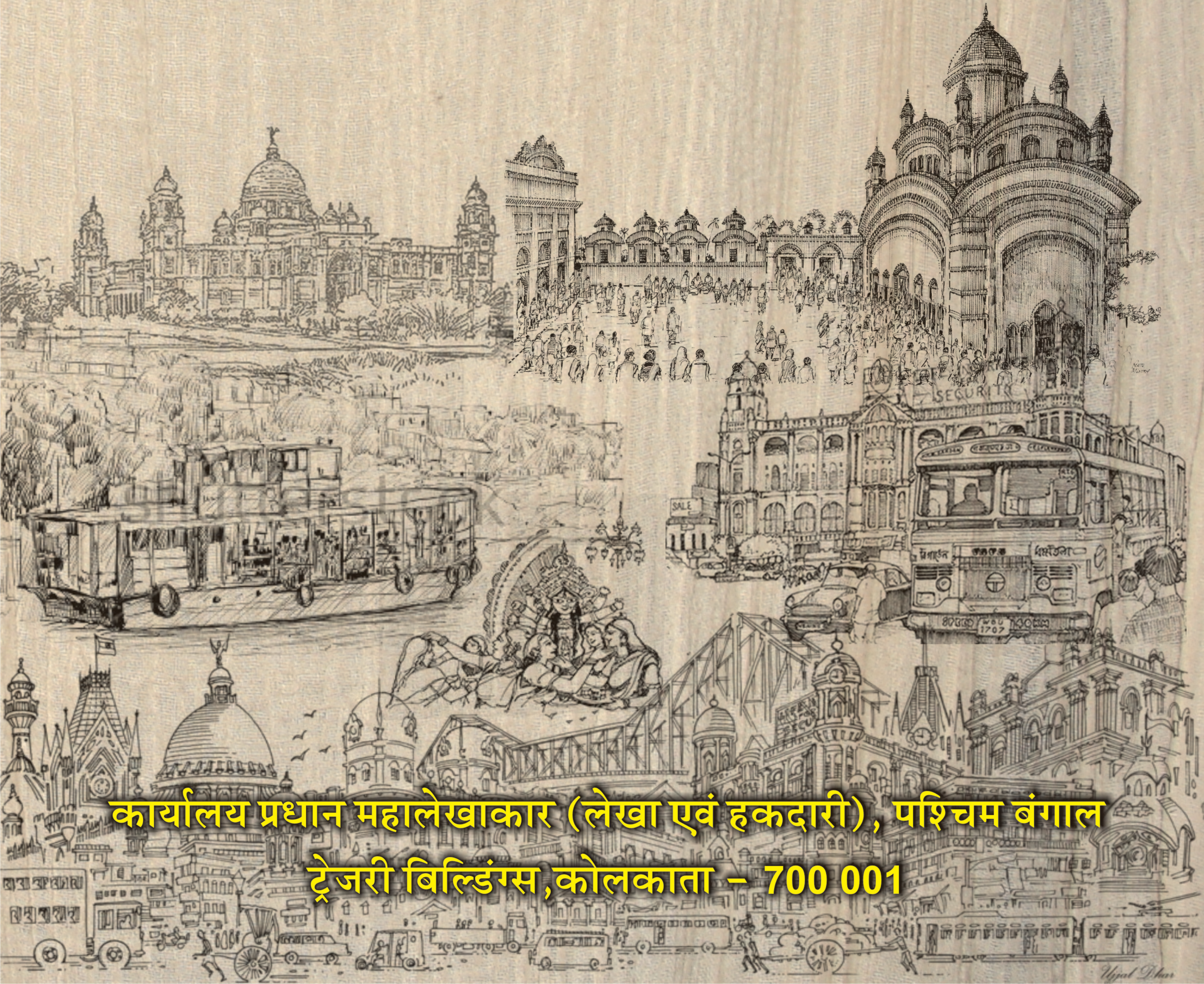

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेज़री बिल्डिंग्स,कोलकाता – 700 001

पत्रिका विमोचन समारोह की झलकियाँ

सत्यमेव जयते

हिन्दी पत्रिका

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक पत्रिका

सत्रहवाँ अंक

2018

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल

ट्रेज़री बिल्डिंग्स,कोलकाता – **700 001**

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री एम. एस. सुब्रह्मण्यम प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	:	श्री गौतम अल्लादा, उप महालेखाकार (प्रशासन एवं पेंशन) श्री कार्तिक दास, व. उप महालेखाकार (निधि) श्री राहुल कुमार, उप महालेखाकार (लेखा एवं वी एल सी)
प्रधान संपादक	:	श्री मलय कुमार साधु, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	:	श्री आनन्द कुमार पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी
सह-संपादक	:	श्री चन्दन कुमार, हिन्दी अधिकारी
उप-संपादक	:	श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अनुवादक श्री कुन्दन कुमार रविदास, कनिष्ठ अनुवादक
सहायक	:	श्री जितेन्द्र शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह, कनिष्ठ अनुवादक
टंकण कार्य	:	श्री अमित कुमार, लेखाकार एवं श्री अतुल कुमार, लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

सत्यमेव जयते

संदेश

एम. एस. सुब्रह्मण्यम
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता - 700 001

हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के सत्रहवें अंक का प्रकाशन हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। पत्रिकाएँ कार्यालय में सकारात्मक वातावरण बनाती हैं साथ ही साथ कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को भी प्रकट करती हैं। हमारी हिन्दी पत्रिका अपने इन उद्देश्यों को पूरा करने के साथ ही कार्यालय में हिन्दी के अनुरूप वातावरण तैयार करने में सफल रही है। पत्रिका के पिछले अंक के लिए पाठकों का स्नेह पाकर मैं अभिभूत हूँ। आशा है कि इस अंक को भी आप सब की सराहना मिलेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

एम. एस. सुब्रह्मण्यम

एम. एस. सुब्रह्मण्यम

सत्यमेव जयते

संदेश

गौतम अल्लादा
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालयी पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के सत्रहवें अंक के प्रकाशन पर मुझे असीम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आशा के अनुरूप कुछ नए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाएँ देखने को मिल रही हैं। उन नए लेखकों का स्वागत है। 'वन्दे मातरम्' पत्रिका का प्रकाशन हमारे कार्यालय के समस्त अधिकारीगण एवं कर्मचारीवृन्द के द्वारा किया गया एक विनम्र प्रयास है। आशा है कि यह अंक पाठकों के लिए अधिक ज्ञानवर्धक एवं रोचक प्रतीत होगा।

अंत में सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को उनके उत्कृष्ट सहयोग हेतु धन्यवाद।

गौतम अल्लादा

संपादकीय

किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा होती है जो उसकी शान होती है। किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य, बनावट की दृष्टि से सरलता एवं वैज्ञानिकता जैसे गुणों का समावेश होना चाहिए। यह सभी गुण हिन्दी भाषा में हैं। हिन्दी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा है। विश्व में आए हर परिवर्तन के अनुरूप ढलने की कला इसमे मौजूद है। व्यवहार में हिन्दी भाषा का प्रयोग हीनता का नहीं अपितु गौरव का प्रतीक है।

''निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।''

यह बहुत ही सुखद है कि राजभाषा हिंदी एवं ''वन्दे मातरम्'' के प्रति कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रूचि बढ़ी है। किसी भी पत्रिका के प्रकाशित अंक को मिलने वाली सराहना एवं सुझाव उसके संबल होते हैं। सम्पादकीय परिवार की ओर से आभार तथा पत्रिका की गुणवत्ता बढ़ाने के सकारात्मक सुझावों का सदैव स्वागत।

जय हिंद, जय हिंद। जय हिंदी, जय हिंदी।

आनंद कुमार पाण्डेय
(संपादक)
सहायक लेखा अधिकारी

आपके पत्र

आपके कार्यालय से प्रकाशित अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'वंदे मातरम्' की सोलहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में संग्रहीत सभी रचनाएँ सरल एवं ज्ञानवर्धक है। श्री जितेंद्र शर्मा की ''शिक्षा'', श्री कुन्दन कुमार रविदास की ''चुनाव'' और सुश्री कीर्ति श्री की ''मातृभाषा बनाम राजभाषा (लेख)'' काफी सराहनीय है। पत्रिका में संग्रहीत सभी रचनाएँ राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु उपयोगी है। ''वंदे मातरम्'' निरंतर प्रकाशित होती रहे ये हमारी शुभकामना है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय प्राप्ति)
इंद्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली – 100 002

संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''वंदे मातरम्'' की प्राप्ति हुई। अत: आभार स्वीकार करें।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ पाठकों के लिए प्रभावशाली, रोचक, ज्ञानवर्धक, उच्चकोटि एवं मन को लुभाने वाली है। पत्रिका में संकलित श्री जितेंद्र शर्मा जी का लेख ''शिक्षा'', श्री चंद्रशेखर भगत जी की कहानी ''मेरी बेटियाँ'', श्री पंकज कुमार जी की कहानी ''कलकत्ता से पटना'', श्री सन्नी कुमार जी की एकांकी ''पेंशन-एक आशा'' पत्रिका में विशेष रूप से सराहनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा भी उत्तम है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका ''वंदे मातरम्“' के उज्ज्वल भविष्य के लिए ''सुगन्धा'' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), पंजाब
प्लॉट नं. 21, सेक्टर 17, चंडीगढ़– 160017

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका वंदे मातरम के 16 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते है।

यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण संदेश देती है। श्री जितेन्द्र शर्मा जी की ''शिक्षा'', श्री अभिजीत दत्त जी की ''जेल की कहानी'', श्री कुन्दन कुमार रविदास जी की ''चुनाव'', श्री चन्द्रशेखर भगत जी का ''मेरी बेटियाँ'', एवं श्री धनेश कुमार जी की ''बेटी का दर्द'' विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ, पृष्ठ सज्जा तथा मुद्रण अत्यंत आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण है। पत्रिका के उत्तम सम्पादन हेतु संपादक मण्डल बधाई के पात्र है।

पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, वैज्ञानिक भवन, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन (छठा तल), निजाम पैलेस
234/4, ए. जे.सी. बोस रोड, कोलकाता – 700 020

अर्द्धवार्षिक पत्रिका ''वंदे मातरम्'' के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ रोचक होने के साथ ज्ञानवर्धक एवं विषयानुकूल है। अहिंदीभाषी क्षेत्र से राजकाज में हिन्दी के विकास को बढ़ावा हेतु किया गया यह प्रयास प्रशंसनीय है।

श्री नबेन्दु दासगुप्त की यात्रा वृत्तान्त ''चलो बुलावा आया है'', श्री धनेश कुमार की कविता ''बेटी का दर्द'', श्री अभिषेक कुमार गुप्ता की कहानी ''नॉट ए लव स्टोरी'' एवं श्री विजय कुमार बर्मन की ''अजन्मा एक संसार'' विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, रचनाओं के उचित चयन एवं सम्पूर्ण सम्पादन हेतु सम्पादकीय परिवार को बधाई।

कुलदीप जोशी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान
जनपथ, जयपुर – 302 005.

उपर्युक्त विषय से संबन्धित आपके कार्यालय के पत्र सं. हि. से/ हिन्दी पत्रिका/2018-19/162 दिनांक 11.05.2018 से आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका वंदे मातरम के 16 वें अंक की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका की विषय वस्तु ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सम्मिलित की गई सभी रचनाएँ श्रेष्ठ, महत्वपूर्ण एवं सराहनीय है। श्री जितेंद्र शर्मा जी की रचना ''शिक्षा'' में जहां जीवन में शिक्षा के महत्व को बताया है, वहीं सुश्री कीर्ति श्री जी की रचना ''मातृभाषा बनाम राजभाषा'' हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए एक सफल प्रयास है। श्री पंकज कुमार गुप्ता जी की रचना ''कलकत्ता से पटना'' भारत की रेल व्यवस्था पर कटाक्ष है।

पत्रिका के सम्पादन और सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल को ढेर सारी बधाइयाँ।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चंडीगढ़
प्लॉट नं. 20-21, सेक्टर –17ई, चंडीगड़ – 160017

आपके द्वारा प्रेषित अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका ''वंदे मातरम्'' का सोलहवां अंक प्राप्त हुआ। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ ज्ञानवर्धक, रोचक एवं मनोरंजक हैं विशेषकर ''शिक्षा'', ''मेरी बेटियाँ'', ''पेंशन-एक आशा (एकांकी)'' व ''नॉट ए लव स्टोरी''। रचनाओं के साथ-साथ उनकी साज-सज्जा, मुद्रण और उनमें अंतर्निहित फोटो सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखंड
प्रधान महालेखाकार भवन, कौलगढ़, देहरादून – 248195

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''वन्दे मातरम्'' के 16 वें अंक की तीन प्रतियाँ प्राप्त हुई, एतदर्थ' धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। विशेषकर श्री जितेंद्र शर्मा द्वारा लिखित लेख ''शिक्षा'', सुश्री कीर्ति श्री द्वारा लिखित ''मातृभाषा बनाम राजभाषा'', तथा श्री सन्नी कुमार द्वारा लिखित कविता ''हवा'' अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
महानिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय, मुंबई का कार्यालय,
सी-25, ऑडिट भवन, आयकर भवन के पीछे,
बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक-प्रशा./हिन्दी सेल/हिन्दी पत्रिका/2018-19/153 दिनांक 08.05.2018 द्वारा अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका ''वंदे मातरम्'' के सोलहवें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय एवं उत्कृष्ट है। पत्रिका का स्वरूप लुभावना है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री पंकज कुमार गुप्ता की ''कोलकाता से पटना'', श्री धनेश कुमार की ''बेटी का दर्द'', श्री सन्नी कुमार की ''हवा'', श्री आनंद कुमार पांडे की ''माँ तारा'' आदि काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। सभी रचनाकार बधाई के पात्र है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु सम्पादक मण्डल के सभी पात्र बधाई के योग्य है। पत्रिका इसी प्रकार से निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, बिहार, पटना
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग,पटना – 800 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''वन्दे मातरम्'' के 16वें अंक की प्राप्ति हुई। पूरी पत्रिका मनोयोग से पढ़ी तथा पढ़ने के लिए प्रस्तुत की है। पत्रिका में प्रकाशित अधिकांश रचनाएँ इस कार्यालय के सभी कार्मिकों को अच्छी लगीं। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद।

इस पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ की सरलता बहुत प्रभावशाली है। सम्पादक मण्डल की मेहनत दृष्टिगोचर हो रही है। पत्रिका में संकलित रचनाएँ उत्कृष्ट तथा ज्ञानवर्धक है। इन रचनाओं में से कुछ रचनाएँ अत्यंत रुचिकर है जिनमे से शिक्षा, जेल की कहानी, चुनाव, मेरी बेटियाँ, अजन्मा एक संसार प्रमुख है। श्री सन्नी कुमार विरचित सेवानिवृत्त सरकारी तंत्र के दांव-पेंच का सटीक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करती एकांकी ''पेंशन - एक आशा'' विशेष रूप से प्रशंसनीय है। भविष्य में भी ऐसी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी शुभकामानाएँ स्वीकार करें।

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा बोर्ड - 1, मुंबई
सातवीं मंजिल, आर. टी. आई. बिल्डिंग, प्लॉट नं. सी-2,
जी . एन. ब्लॉक, एशियन हार्ट इंस्टीटच्यूट के पीछे,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व), मुंबई - 400 051

आपके पत्र संख्या : प्र.हि.से./हिन्दी पत्रिका/2018-19/209, दिनांक : 08.05.2018 द्वारा आपकी कार्यालीन हिन्दी पत्रिका ''वंन्दे मातरम्'' के 16वें अंक की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ, लेख व कविता सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर ''बच्चों के प्रति माँ-बाप का प्यार'', ''बेटी का दर्द, ''शिक्षा'', ''पेंशन एक आशा'' तथा ''मेरी बेटियाँ'' रोचक व शिक्षाप्रद है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2 गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता - 700 001

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''वंन्दे मातरम्'' के 16वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपुष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। ''बच्चों के प्रति माँ बाप का प्यार'', ''बेटी का दर्द'', ''प्रियतम का उपहार'' आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय है। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

सधन्यवाद।

उदय प्रताप सिंह
हिन्दी अधिकारी/हिन्दी कक्ष
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय,
पार्क हाउस रोड, बेंगलूर - 560 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा हिन्दी पत्रिका ''वन्दे मातरम्'' के 16वें अंक की एक प्रति प्राप्त हूई। पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। आवरण पृष्ठ सुंदर है। संकलित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। श्री जितेंद्र शर्मा का लेख ''शिक्षा'' अत्यंत सार्थक एवं तथ्यपरक है। श्री चंद्रशेखर भगत की कहानी ''मेरी बेटियाँ'' एवं श्री सन्नी कुमार द्वारा लिखित एकांकी ''पेंशन-एक आशा'' प्रशंसनीय है। सुश्री कीर्ति श्री का लेख ''मातृभाषा बनाम राजभाषा'' गागर में सागर की उक्ति को चरितार्थ करता है। कविताओं में श्री धनेश कुमार की ''बेटी का दर्द'' तथा श्री अमित कुमार की ''दर्द-एक एहसास'' मन को छू लेती है।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हमारे कार्यालय की तरफ से हार्दिक बधाई।

लेखा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - I उ. प्र. इलाहाबाद
20, सरोजिनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद - 211001

आपके पत्र सं. प्र.हि.से./हिन्दी पत्रिका/2018-19-144 दिनांक 08/05/2018 के साथ पत्रिका 'वंदे मातरम्' के सोलहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद व प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित रचनाएँ, विशेषकर - श्रीमती तापसी आचार्य बसाक द्वारा रचित ''वापसी (कहानी)'', श्री विजय कुमार बर्मन द्वारा रचित ''प्रियतम का उपहार (कविता)'', सुश्री कीर्ति श्री द्वारा रचित ''मातृभाषा बनाम राजभाषा'', श्री पंकज कुमार गुप्ता द्वारा रचित ''मुसाफिर हूँ मैं'' और श्री विजय कुमार बर्मन द्वारा रचित ''अजन्मा एक संसार'' बहुत अच्छी लगी। अन्य विभिन्न लेख और कविताएँ भी रोचक तथा अर्थ से भरी हुई है। पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/राजभाषा
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा व हकदारी) - I, महाराष्ट्र
2री मंजिल, प्रतिष्ठा भवन, न्यू मरीन लाइंस,
101 महर्षि कर्वे मार्ग, मुंबई - 400 020

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'वंदे मातरम्"' के सोलहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं अत्यंत ही सराहनीय है। पत्रिका में समाहित रचनाएँ शिक्षा, जेल की कहानी, चुनाव, हवा, वापसी, नॉट ए लव स्टोरी, कलकत्ता से पटना एवं मातृभाषा बनाम राजभाषा विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
ओड़ीशा, भुवनेश्वर – 751001

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'वन्दे मातरम्' की प्रति प्राप्त हुई। कार्यालय की पत्रिका का मुखपृष्ठ अनूठा है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ जैसे मेरी बेटियाँ, बच्चों के प्रति माँ-बाप का प्यार, कलकत्ता से पटना, वापसी, माँ तारा और चलो बुलावा आया है लेख तथा प्रियतम का उपहार, बेटी का दर्द, दर्द-एक एहसास, मुसाफिर हूँ तथा अजन्मा-एक संसार इत्यादि सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक व उत्कृष्ट है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

मेरी व्ही. अलेक्जेंडर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा.
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा) – III, महाराष्ट्र
प्रतिष्ठा भवन, तल मंजिल,
101, महर्षि कर्वे मार्ग, मुंबई – 400 020

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित ''वंदे मातरम्'' पत्रिका के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका में सभी रचनाएँ, लेख एवं कविताएँ रोचक, ज्ञानवर्धक, पठनीय, सारगर्भित एवं सराहनीय है। पत्रिका की साजसज्जा मनमोहक है।

हिन्दी भाषा की प्रगति में योगदान के लिए आप बधाई के पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) म. प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद, भोपाल – 462011

आपके कार्यालय के पत्र सं. प्र. हि. से./हिन्दी पत्रिका/2018-119/220, दिनांक - 08/05/2018 के तहत हिन्दी पत्रिका - ''वंदे मातरम्'' सोलहवां अंक की एक प्रति प्राप्त हुई।

हिन्दी पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियाँ, एवं कविताएँ पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक है। श्री धनेश कुमार द्वारा लिखित कविता - ''बेटी का दर्द'', सुश्री कीर्ति श्री द्वारा लिखित लेख - ''मातृभाषा बनाम राजभाषा'', श्री सन्नी कुमार द्वारा लिखित एकांकी - ''पेंशन-एक आशा'' एवं श्री अमित कुमार द्वारा लिखित कहानी ''बच्चों के प्रति माँ बाप का प्यार'' विशेष रूप से सराहनीय है तथा अन्य सभी रचनाएँ भी प्रशंसनीय है। पत्रिका के अविरल प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर सफलता के लिए शुभकामनाएँ और शुभेच्छाएँ।

सुशील टोपनो
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा.
महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखा-परीक्षा
तथा पदेन सदस्य लेखा-परीक्षा बोर्ड-1, का कार्यालय,
1, कोंसिल हाउस स्ट्रीट,
कोलकाता - 700 001

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''वंदे मातरम्“' का सोलहवां अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। यह अंक अपनी साज-सज्जा और मुद्रण में उत्कृष्ट है। पत्रिका में संग्रहीत सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्धक है। रचनाओं के चयन में जो विविधता बरती गयी है वो संपादकीय विशिष्टता को उजागर करती है। इस अंक की विशेष रूप से उल्लेखनीय रचनाएँ है - ''शिक्षा (लेख)'', ''चलो बुलावा आया है (यात्रा वृत्तान्त)'', ''जेल की कहानी (कहानी)'', ''पेंशन-एक आशा (एकांकी)'', ''मातृभाषा बनाम राजभाषा (लेख)'', ''अजन्मा-एक संसार (कविता)''। निःसंदेह ये सारी रचनाएँ भाव और विषयवस्तु के अनुसार अत्यंत स्तरीय हैं।

राजभाषा हिन्दी के विकास में पत्रिका 'वंदे मातरम' का अन्यतम योगदान है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है।

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना - 800 001

आपके कार्यालय की हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका ''वंदे मातरम'' के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय है। विगत अंकों की तरह ये अंक भी सुंदर है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने रचनाओं को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र है। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है तथा भविष्य में पत्रिका के भीतर के रंगीन पृष्ठों के

साथ अगले अंक के और भी निखरकर आने की संभावनाएं व्याप्त है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका का मुख पृष्ठ सुंदर है।

पत्रिका के कुशल तथा सफल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

वी. एस. रेड्डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) - II, महाराष्ट्र
'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र. 220,
सिव्हिल लााइंस, नागपुर - 440001

आपके कार्यालय के पत्र संख्या : प्र.हि.से./हिन्दी पत्रिका/2018-19/163 दिनांक 08.05.2018 द्वारा प्रेषित पत्रिका ''वंदे मातरम'' के सोलहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ पाठकों के लिए प्रभावशाली, रोचक तथा ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला - 171 003

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका ''वंदे मातरम'' का सोलहवां अंक पत्र संख्या प्र.हि.से./हिन्दी पत्रिका/2018-19/219, दिनांक - 08.05.2018 द्वारा प्राप्त हुआ।

पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ शिक्षाप्रद, नीतिप्रद, नीतिपरक एव रोचक है। ये सभी रचनाएँ अत्यंत सराहनीय और प्रासंगिक भी है।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी/राजभाषा
भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
महानिदेशक, लेखा-परीक्षा का कार्यालय,
केंद्रीय, कोलकाता।
जी. आई. प्रेस बिल्डिंग, 8,
किरण शंकर रोड (प्रथम मंजिल), कोलकाता - 700 001

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'वंदे मातरम्' प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मन को लुभानेवाली है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देनेवाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार (ले. व. ह.)
का कार्यालय, केरल, तिरूवनत्तपुरम

''आपके स्नेह के हम आभारी हैं कि आपने हमें अपना अभिमत भेजा। पत्रिका के बेहतर भविष्य के लिए इसी प्रकार अपनी राय एवं सुझाव देकर हमारा उचित मार्गदर्शन करते रहें।''

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	बर्थ नं. 43 (कहानी)	श्री नबेन्दु दाशगुप्त	1
2.	निधि अनुभाग के वित्तीय वर्ष 2017-18 का सम-सामयिक (कार्यालय संबंधी कार्य)	सौजन्य-निधि विविध अनुभाग	6
3.	हमारी हिन्दी (लेख)	श्री सन्नी कुमार	7
4.	माँ (कविता)	श्रीमती लिपिका दास	10
5.	अमावस का दृढ़संकल्प (कहानी)	श्री धनेश कुमार	11
6.	इश्तेहार (कविता)	श्री अतुल कुमार	13
7.	कद्दू (व्यंग्य)	श्री विकास कुमार	14
8.	दूसरा शहर (कहानी)	श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह	16
9.	भित्तिचित्र (कहानी)	श्री चंदन कुमार	17
10.	भूस्वर्ग कश्मीर (यात्रा वृतांत)	श्री अमृत दत्त	21
11.	'बेहया का जंगल' के मायने और प्रासंगिकता (साहित्यिक)	श्री कुन्दन कुमार रविदास	23
12.	एक अविस्मरणीय यात्रा वृतांत (यात्रा वृतांत)	श्री आनंद कुमार पाण्डेय	27
13.	सुनहरे पल (कविता)	श्री पंकज कुमार गुप्ता	30
14.	बचपन की यादें (कविता)	श्री राजेश कुमार	32
15.	चलते जाना है (कविता)	श्री अमित कुमार	34
16.	फितूर-ए-इश्क (कहानी)	श्री अतुल कुमार	35
17.	अग्नि-शुद्धि (कहानी)	श्रीमती तापसी आचार्य (बसाक)	38
18.	घर-घर की कहानी माँ बाप की जुबानी (लेख)	श्री अमित कुमार	43
19.	पत्र (कविता)	श्री विश्वजीत पाल	46
20.	मैं प्राचीन बरगद का पेड़ हूँ (कविता)	श्रीमती बेबी पाल	47
21.	तबीयत (कविता)	श्री सन्नी कुमार	48
22.	अनुभूति (कविता)	श्रीमती सुस्मिता सरकार	49
23.	वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ	श्री जितेंद्र शर्मा	50

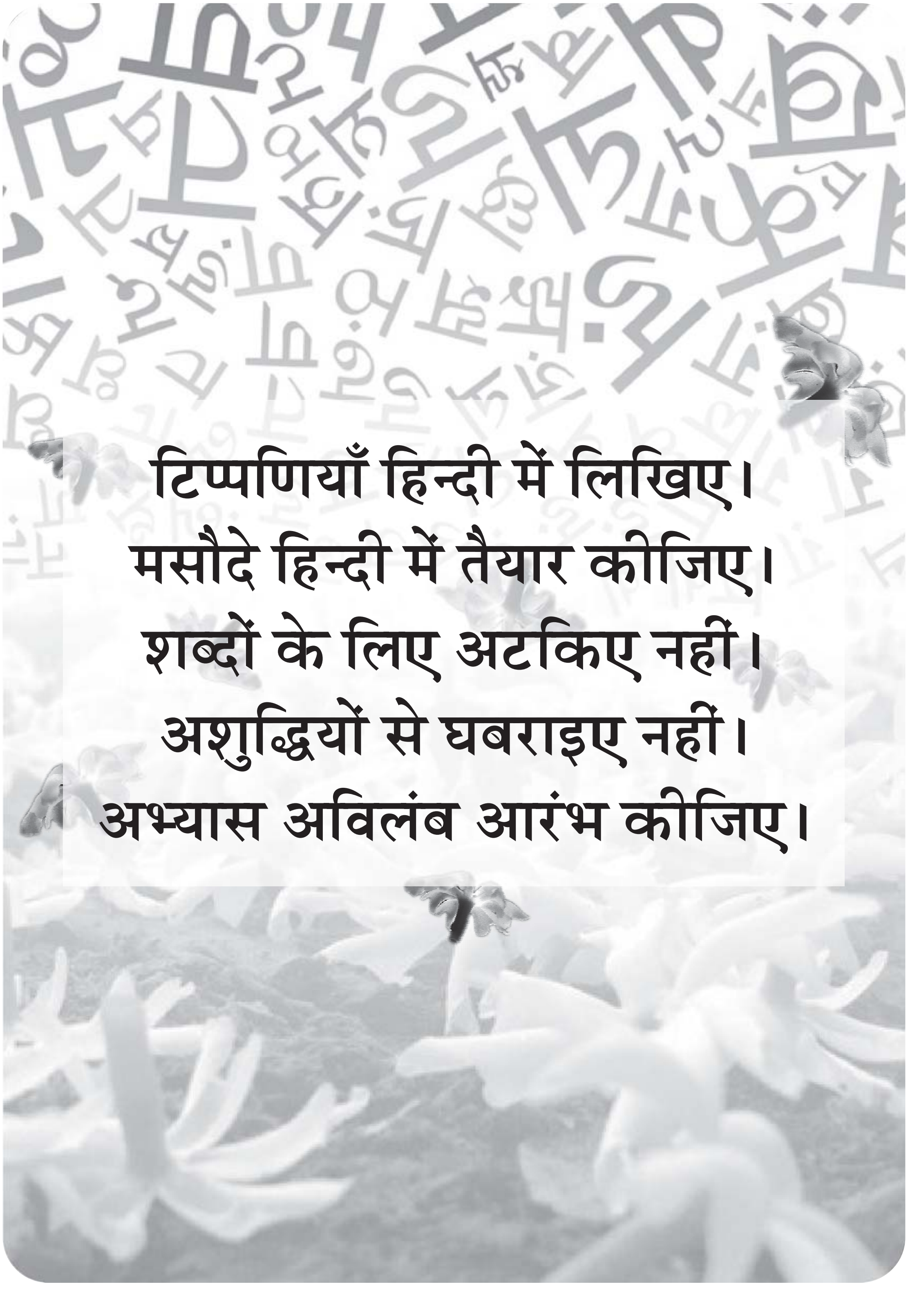
टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ

हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ

बर्थ नं - 43

मेरी धर्मपत्नी को बहुत दिनों से कन्याकुमारी दर्शन करने की तमन्ना थी। पर जब रेलवे टिकट कटाने गए तो प्रतीक्षा सूची में नाम दर्ज हुआ। यात्रा के दो दिन पहले तक टिकट कंफर्म होने की कोई सम्भावना न देखकर यात्रा को रद्द कर दिया गया। आखिरकार घर-स्कूल सब की स्थिति को देखते हुए अक्तूबर 2010 को यात्रा करने की सम्भावना हुई तो 90 दिन पहले न्यू कोयलाघाट आरक्षण केंद्र में जाकर टिकट लिया। बर्थ संख्या 12,21,22 कंफर्म हुआ। हिसाब अनुसार वापसी का टिकट भी नियत तारीख पर कर लिया जिसमें बर्थ संख्या 44,45,46 कंफर्म हुआ।

कार्यक्रम के अनुसार दुर्गापूजा की छुट्टी के अवसर पर पूजा से दो दिन पहले ही हम रवाना हुए। हावड़ा स्टेशन से हम चेन्नई मेल से मुख्य यात्रा शुरू किए। हमारी बर्थ नं 12 साइड अपर एवं 21 व 22 लोअर व अपर था जो एक अलग कूप जैसा था क्योंकि यह डिब्बा सेकंड ए. सी. का कंपोजिट डिब्बा था। यह देख कर मेरे परिवार को बेहद खुशी हुई। कारण वहाँ कुछ हद तक प्राइवेसी रहेगी। इस गाड़ी से चेन्नई तक जाने के बाद तिरूवनन्तपुरम मेल पकड़कर हम तिरूवनन्तपुरम पहुँचे। वहाँ दोपहर का खाना खाने के बाद बस से कन्याकुमारी की ओर चल पड़े। कन्याकुमारी में हम दो दिन रहे और घूमे। मेरी पत्नी की तमन्ना भी पूरी हो गई। हमारे कार्यक्रम के अनुसार कन्याकुमारी से केरल वापस आए और तिरुवनन्तपुरम, अलाप्पुजा, थेकड़े, पेरियर आदि घूमकर मदुरै आए। मदुरै दर्शन के बाद हावड़ा मेल पकड़ने के लिए चेन्नई लौटे। जाने एवं आने के समय दूसरी गाड़ी पकड़ने के लिए हमें सारा दिन चेन्नई में ठहरना पड़ा। इस अवसर का उपयोग करते हुए हम चेन्नई एवं ममल्लपुरम (महाबलीपुरम) के भी दर्शन कर लिए।

हमारी यात्रा का अंतिम चरण था चेन्नई से हावड़ा मेल में सफर। गाड़ी रात को 11.40 बजे थी। हमने दिन में नगर दर्शन करने के बाद विश्राम किया। रात का भोजन होटल में कर लिए। फिर हम 10 बजे के बाद स्टेशन आए। सूचना देनेवाली डिस्प्ले बोर्ड के सामने जहाँ बैठने के लिए कुर्सियाँ लगी हुई थी वहाँ बैठकर गाड़ी की सूचना का इंतजार करने लगे। करीब 10.30 बजे सूचना मिली तो हम प्लेटफॉर्म पहुँचे। वहाँ गाड़ी लगी हुई थी। हमने अपना डिब्बा ढूंढ लिया और चार्ट पर अपना नाम भी परख लिया, पर ट्रेन के दरवाजे बंद थी। कुछ देर तक इंतजार किया। तब तक मैंने फिर से एकबार चार्ट को देखा कि आसपास के यात्रियों में कोई बांग्ला या हिंदी भाषी है या नहीं। चार्ट पर बर्थ नं 43 पर एक दक्षिण भारतीय नाम और उससे पहले वाले बर्थों में कुछ बंगाली नाम देखा। चार्ट पर हमारा नाम ही आखिरी नाम था। तभी अंदर से किसी ने दरवाजा खोल दिया तो हम डिब्बो में चढ़ गए। चार्ट के अनुसार डिब्बे के एक प्रांत में बर्थ पाया जिसमें दो अपर और एक लोअर थे। बर्थ नं 43 हमारे लोअर बर्थ 45 नं के विपरीत में लोअर था।

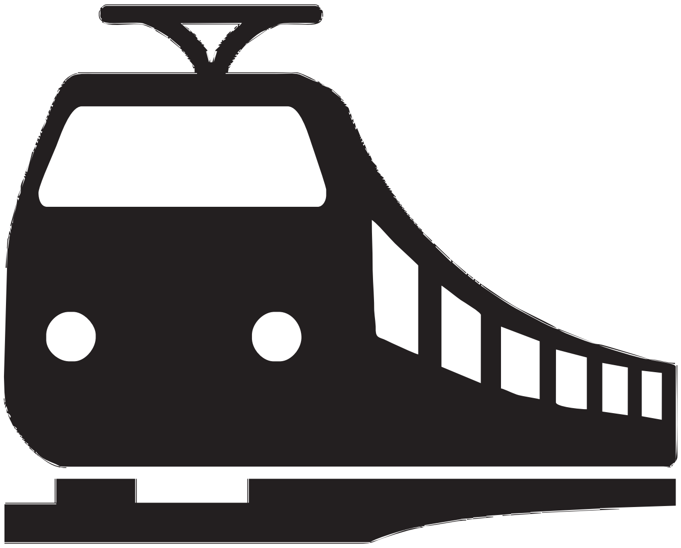

हमने अपना सामान हमारे बर्थ के स्थिति के अनुसार बन्दोबस्त कर लिया। सामान के साथ यात्रियों की चहलपहल यथारीति चल रही थी। हमारे बराबर साइड बर्थ वाले आए। सामान रखकर उनके सामने का पर्दा खींच दिया। वातानुकूलित श्रेणी की यही सुविधा (या असुविधा) है। लेकिन हमें तो बर्थ नं 43 के यात्री का इंतजार था और इसलिए पर्दा नहीं खींचा। सोच रहे थे कि उनसे वार्तालाप कैसे संभव होगा। क्योंकि कोई भी दक्षिण भारतीय भाषा हमें नहीं आती है। यह सब सोचते-सोचते इंतजार कर रहे थे। गाड़ी खुलने में तो देर थी ही, वह इंतजार बड़ा लंबा लग रहा था। मेरी पत्नी भी बड़ी बैचेन हो रही थी। गाड़ी खुलने के थोड़ी देर पहले बर्थ नं 43 ढूंढते हुए एक सज्जन पहुँचे। उनके साथ एक ब्रीफकेस, एक बैग और एक लैपटॉप का बैग था। अपने सामान को बर्थ पर रखकर राहत की एक लंबी सांस ली और साफ हिंदी में पूछा— ''यह हावड़ा मेल है न''।

—''जी हाँ'', हमने जवाब दिया।

उनका यह सवाल सुनकर मैं थोड़ा हैरान हो गया, क्योंकि हम तो चेन्नई मेल के नाम से परिचित हैं। पर तुरंत समझ लिया कि हम हावड़ा की ओर जा रहे हैं इसलिए नाम वैसा पूछा। किन्तु राहत की बात यह थी कि यह व्यक्ति हिंदी जानता था, अत: बातचीत तो कर सकेंगे। राहत की सांस लेने के बाद उसने अपने सामान को ठीकठाक कर लैपटॉप को चलाने की कोशिश की। लेकिन गाड़ी के प्लग प्वाईन्ट में बिजली नहीं आ रही थी। उन्होने एटेन्डेंट को बुलाकर यह समस्या बताया पर कुछ काम न हुआ। थोड़ी देर बाद वे सब बंद कर सोने की तैयारी करने लगे। अपने बर्थ पर आसन मुद्रा में थोड़ी देर चुपचाप बैठकर लेट गए। हम भी लेट गए चूँकि रात के 12.30 बज चुके थे।

अगली सुबह रेलयात्रा की अति-परिचित चित्र वर्तमान था। चाय, नाश्ता आदि का आवागमन शुरू हो गया था। हम प्रात:कृत्य सम्पन्न कर चाय नाश्ता के इंतजार में थे। कुछ देर बाद हमने नाश्ता कर किया। 43 नम्बर के सज्जन ने भी नाश्ता के बाद बिजली के समाधान के लिए फिर एटेंडेंट को बुलाया। इस बार कोशिश सफल रही। वे अपने लैपटॉप में व्यस्त हो गए। कुछ देर बाद उनके साथ वार्तालाप होने लगा। बातों-बातों में पता चला कि वे अपनी नौकरी के दौरान हिंदी-भाषी क्षेत्र में बहुत दिनों तक पदस्थापित थे। यही नहीं

कोलकाता में भी वे कई बार आए हैं और उनके दोस्त भी यहाँ है। फिलहाल वे कांकिनाड़ा बन्दरगाह में पदस्थापित हैं। उनकी बातें और हाव-भाव से लगा कि वे एक सांसारिक धार्मिक व्यक्ति हैं। सूचना विनिमय में वे अपना विजिटिंग कार्ड दिए जिससे हमें पता चला कि वे एक जहाज कम्पनी में जनरल मैनेजर हैं। उनके साथ हमारा सफर सीमित था। गाड़ी में चढ़ने से पहले से मैं यह जानता था पर चार्ट में स्टेशन का कोड था पूरा नाम नहीं, जिसके कारण उनका गंतव्य है कहाँ तक यह समझ नहीं पाया था। उनके वर्तमान कार्यस्थल कांकिनाड़ा के लिए उन्हें समलकोट स्टेशन उतरना था। गोदावरी पार करने के थोड़ी देर बाद हमसे विदा लेते हुए वे उतर गए। बर्थ नं 43 खाली हो गया।

गाड़ी चल पड़ी। मेरी पत्नी बोली, 'चलो यह लोअर बर्थ खाली हुआ'।

जबाव में मैंने कहा, ''हाँ, ज्यादा से ज्यादा विशाखापत्तनम् तक, हावड़ा तक नहीं। क्योंकि बीच स्टेशन का कोटा रहता है। हमारी दो अपर बर्थ होने के कारण कुछ दिक्कत हो रही थी। इसलिए मेरी पत्नी ने थोड़ी राहत की ही अपेक्षा की थी। समलकोट स्टेशन में तो कोई यात्री नहीं आया। जब तक कि कोई यात्री न आते है, हम बर्थ 43 का उपयोग करने लगे। गपशप और बाहर का नजारा देखते-देखते हम आगे बढ़ रहे थे। हमलोगों के दोपहर का खाना आने में थोड़ी देर हुई। खाना आने पर हम खाना शुरू कर दिए। हमारा खाना खत्म होने से पहले ही देखे कि विशाखापत्तनम् स्टेशन पर गाड़ी पहुँच गई। कुछ पल बाद ही एक व्यक्ति आया और पर्दा हटाकर बर्थ नं 43 देखा और चला गया। उनके बाद और 2-3 व्यक्ति आए, बर्थ को देखा और 'यह है 43' बड़बड़ाए फिर चले गए। 43 पर बैठकर मेरा खाना जारी था। स्थिति को देखकर मैंने सोचा कि शायद बर्थ 43 अब तक आरक्षित नहीं हुआ जिसके कारण इतने लोग 43 की तलाश कर रहे हैं। तभी एक औरत आई और पर्दा हटाकर 43 खोजने लगी।

वह पूछी - ''43 कौन सी है''।

मैंने जबाव दिया - ''यह नीचे वाली है''।

यह सुनकर उस औरत ने डिब्बे के दूसरी ओर देखते हुए चिल्लाना शुरू किया जैसे कि कोई खोयी हुई कीमती चीज मिल गयी हो-

''अजी सुनते हो, 43 नं इधर है, यहाँ। हमारा 43 इधर यहाँ, लोअर बर्थ है। अजी सुनते हो...., सुनते हो....''।

इतना चिल्लाने के बाद भी दूसरी ओर से कोई आवाज नहीं आया, न ही किसी व्यक्ति के दर्शन हुए। वह औरत चली गई। थोड़ी देर बाद एक सज्जन आए और छानबीन कर चले गए। बात यही खत्म नहीं हुई। छानबीन करनेवालों का आना जाना लगा रहा। सभी बर्थ नं 43 ढूंढ रहे थे। न जाने उन सभी को कैसे केवल खाली बर्थ 43 ही नजर आ रही थी।

कुछ देर बाद एक व्यक्ति आया। सभी बर्थ को ऊपर-नीचे देखकर चले गये। फिर हमने देखा कि गोद में एक बच्ची और कंधा में एक बैग लेकर एक औरत आई और बर्थ 43 पर बैठ गई। यह वह 'अजी' वाली औरत नहीं थी। उनके पीछे वही ऊपर नीचे निरीक्षण करनेवाला व्यक्ति हाथ में दो बड़े-बड़े बैग लेकर आया और बर्थ के नीचे घुसा दिया। थोड़ी देर बाद देखा कि वह व्यक्ति एक विशालाकाय सूटकेस जैसा बैग को खींचकर लाया और बर्थ के नीचे घुसाने का व्यर्थ प्रयास करने लगा। अंत में उसे दो बर्थ के बीच वाली जगह पर रख दिया। उनके सामान हमारे सामान से भी ज्यादा थे। स्थिति को देखकर हमारी स्थिति तो दिन में तारा दिखने वाली हो गयी। बातचीत से पता चला कि दूसरी ओर उनका एक बर्थ है जहाँ वे 'अजी' वाले से कुछ बन्दोबस्त किया। वे लोग खुरदारोड तक जाएंगे। अर्थात् खुरदा रोड तक हमें यह ओवर लोड की स्थिति को झेलना होगा। पूछने वालों में से दो सीमा सुरक्षा बल के जवान थें जिन्हें हावड़ा तक जाना था और वे लोग भी 43 की आस में वहीं खड़े थें। उन दोनों में एक वरिष्ठ थें। ऐसे वातावरण में एक और व्यक्ति का आगमन हुआ। वे भी आकर 43 बर्थ कहाँ है, पूछने लगे। बाद में पता चला कि वह व्यक्ति चेन्नई गया था कुछ इलाज कराने। कंफर्म टिकट नहीं मिला। किसी ने बर्थ कंफर्म हो जाएगा कहकर उन्हें गाड़ी में चढ़ा दिया। देखने में तो अस्वस्थ ही लग रहा था। पर बर्थ कंफर्म नही हुआ। हमें समझ में नहीं आ रहा था कि इतने सारे लोगों को केवल बर्थ नं 43 कैसे खाली नजर आ रही थी।

गाड़ी आगे बढ़ती गयी और दिन ढलता गया। रात को करीब 8 बजे गाड़ी खुरदा रोड पहुँची। उतरने वाले अपने सामान लेकर उतर गए। हमें आराम से हाथ पैर फैलाकर बैठने का मौका मिला। खड़े हुए जवान लोग वहां बैठे। उनके साथ सामान कुछ खास नहीं था। उनके और भी साथी थे जिनके पास उनका सामान था। अब इन लोगों के साथ वार्तालाप होने लगा। उनके बातों से पता चला कि बर्थ नं 43 कटक कोटा से आरक्षित है और 43 के असली हकदार वहीं पर आएंगे। तब तक वे लोग 43 पर बैठ सकते थे। यह बात सुनकर समझ में आया कि समलकोट से कटक तक 43 अनारक्षित है। केवल हमें छोड़कर सभी लोगों को पता है 43 अनारक्षित चल रही है। टी.टी.ई. का कोई दर्शन नहीं मिल रहा था जिससे यह पता चले कि बर्थ की स्थिति क्या है।

वरिष्ठ व्यक्ति ने हमसे पूछा—''अगर हमारा बर्थ कंफर्म नहीं हुआ और हम यहाँ फर्श पर लेटेंगे तो कोई एतराज तो नहीं है?''

स्थिति को देखते हुए मैंने कहा—''टी.टी.ई. इजाजत दें तो रह सकते हैं।''

बातों-बातों में समय बीता और रात का खाना आ गया। हम खाना खा लिए। कुछ देर बाद वही 'अजी' वाले के श्रीमानजी आए और सोने की व्यवस्था देखने लगे। वरिष्ठ जवान व्यक्ति ने उनसे भी फर्श पर लेटने की इजाजत मांगी। पर 'अजी' वाले श्रीमानजी ने इनकार किया और कहा—

''...नहीं, यहां एक महिला सोयेगी, यहाँ फर्श पर लेटा नहीं जाएगा।''

फिर वे चले गए। हमलोग सोने की तैयारी करने लगे। जब टॉयलेट के लिए आगे बढ़े तो देखा कि वह बीमार आदमी दरवाजा के पास स्टाफ लोगों के लिए जो लकड़ी वाला बर्थ जैसा था उस पर लेटे हुए हैं। वापस आकर हम लेट गए। गाड़ी कटक पहुँची। तब देखा कि 'अजी' वाले श्रीमान जी आए और 43 पर लेट गए न कि कोई महिला आई। अर्थात कटक से आरक्षित है यह बात भी सही नहीं है। तो फिर 43 की स्थिति क्या है कुछ पता चल न पाया। यह सब देखते सुनते हम सो गए। गाड़ी में नींद अकसर टूट जाती है। रात को देखा कि कोई कम्बल ओढ़कर फर्श पर लेटे हुए है। वही जवान लोगों में कोई होगा शायद। सुबह 4 बजे गाड़ी को हावड़ा पहुँचना था। रात को 3बजे के बाद और सोए नहीं। 3.30 बजे के बाद जब देखा कि गाड़ी संतरागाछी पार हो रही है तो मैंने अपनी पत्नी और बच्चे को जगा दिया। फर्श पर जो सो रहा था वह भी उठ गया तो देखा कनिष्ठ जवान वहाँ सोए थे। अर्थात् उनको बर्थ नहीं मिला। हमने अपना सामान समेट लिया और दरवाजे के पास आ गए।

गाड़ी हावड़ा सही समय पर सुबह 4 बजे पहुँच गई। दिनरात बर्थ नं 43 को लेकर नाटक का भी समापन हुआ। हमारी यात्रा खत्म होने में कुछ समय और बाकी था। हम मेल ट्रेन से उतरकर 4.15 बजे की लोकल ट्रेन पकड़े और करीब सुबह 5.30 बजे अपने घर पहुँचे। पर बर्थ नम्बर 43 का रहस्य रहस्य ही रह गया।

नबेन्दु दाशगुप्त
सहायक लेखा अधिकारी

निधि अनुभाग के वित्तीय वर्ष 2017-18 का सम-सामयिक कार्य

जी. आई. प्रेस बिल्डिंग स्थित कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल के अधीनस्थ निधि अनुभाग 2017-18 के वित्त वर्ष में लगभग 2.52 लाख से अधिक राज्य सरकारी कर्मचारियों का सामान्य भविष्य निधि के परिचालन, रख-रखाव एवं भुगतान प्रदान निर्धारित समय-सीमा के अंदर संतुष्टिकारक निष्पत्ति निधि अनुभाग के 17 अनुभाग द्वारा किया गया है। यह काम करने में 204 कर्मचारी संलग्न हैं।

2017-18 वित्त वर्ष में सूचना में कुल 285 संख्यक भविष्य निधि लेखा में ऋणात्मक अर्थराशि रू/- 1,64,22,526 था। राज्य सरकार के वित्त आयोग में पत्राचार करने के क्रम में इस वित्त वर्ष के अंत में यह ऋणात्मक अर्थराशि का परिणाम घट कर रू/-84,08,908 हुआ है। अवशिष्ट ऋणात्मक अर्थराशि की अतिशीघ्र निष्पत्ति करने के लिए सभी अनुभाग की तरफ से प्रयास जारी है।

2017-18 वित्तीय वर्ष की सूचना में मिसिंग क्रेडिट की संख्या 26854 थी। अगस्त 2017 माह में अतिरिक्त 100287 संख्यक मिसिंग क्रेडिट जोड़ा गया था, जिनमें से तृतीय तिमाही के अंत में 42026 संख्यक मिसिंग क्रेडिट अवशिष्ट है। यह कुल संख्या का 33 प्रतिशत है।

2017-18 वित्त वर्ष की सूचना में असूचित क्रेडिट वस्तु की संख्या 558 एवं अगस्त 2017 महीना में अतिरिक्त 560 संख्या में असूचित क्रेडिट जोड़े गए थे, जिनमें से तृतीय तिमाही के अंत में 191 असूचित क्रेडिट अवशिष्ट है। यह कुल संख्या का 17 प्रतिशत है।

2017-18 वित्त वर्ष में कुल 14791 संख्यक सामान्य भविष्य निधि के अंतिम भुगतान मामले प्राप्त हुए हैं। जिनमें से 14762 संख्यक अंतिम भुगतान मुख्यालय के समय-सीमा के अनुसार निष्पत्ति किये गये हैं।

सभी राज्य सरकारी कर्मचारियों को आधुनिक परिसेवा प्रदान करने हेतु मोबाईल पर हर महीने के अंत में ''एस.एम.एस. अलर्ट'' परिसेवा चालू किया गया है।

इस कार्यालय द्वारा भविष्य निधि की अंतिम भुगतान की प्राप्ति एवं निष्पत्ति की जानकारी ग्राहक को ''एस.एम.एस.'' के माध्यम से उपलब्ध करवाए जाते हैं।

दैनिक आधार पर महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल के वैबसाइट में अंतिम भुगतान की विस्तारित तथ्य अपलोड किया जाता है। इसके अलावा ''ई-जी.पी.एफ. पोर्टल'' प्रक्षेपण के साथ साथ सामान्य भविष्य निधि के सभी ग्राहक अपना वार्षिक भविष्य का बयान देख इसका प्रिंट ले सकते हैं। मिसिंग क्रेडिट के समायोजन की जानकारी भी प्राप्त होती है।

हर साल जुलाई माह में प्राय: 2.52 लाख से अधिक राज्य सरकारी कर्मचारी का वार्षिक भविष्य निधि का बयान वितरण किया जाता है।

2017-18 वित्त वर्ष में कुल 9233 संख्यक को नये अकाउंट नंबर आवंटन किए गए हैं।

2017-18 वित्त वर्ष में कुल 3007 संख्यक का नामांकन स्वीकार गया है।

सौजन्य -

निधि विविध अनुभाग

हमारी हिन्दी

हिन्दी भाषा विश्व की तीसरी और भारत मे सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह भारतीय संघ की राजभाषा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि हिन्दी आज भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय जनसंपर्क की भाषा है। हिन्दी भाषा की एक विशेषता यह भी है कि ये लोचदार भाषा है। इसमें किसी भी तरह के परिवर्तन को समाहित कर उसके अनुरूप परिवर्तित होने की कला भी मौजूद है। ये अभिव्यक्ति का सागर है जिसे भाषाविदों ने भी सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा कहा है।

आज हिन्दी का महत्व इस कदर बढ़ गया है कि इसने आधुनिक तकनीकी को भी गोद ले लिया है। अब हिन्दी कम्प्यूटर, जनसंचार, सोशल मीडिया आदि जैसे रोजगार की भी माध्यम हो गयी है। हिन्दी सिनेमा की बात करें तो अनेक देशों में अपनी छवि कायम करने मे यह सफल हुआ है।

हिन्दी भाषा के इतिहास की बात करें तो लगभग यह एक हजार साल पुरानी भाषा है। हिन्दी भाषा और साहित्य के विद्वान अपभ्रंश की अंतिम अवस्था अवहट्ट से हिन्दी का उद्भव मानते हैं और जिसे पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने सर्वप्रथम पुरानी हिन्दी का नाम दिया। आगे चल कर सिद्ध-नाथ, विद्यापति और चंदवरदाई की रचनाओं के द्वारा हिन्दी भाषा का स्पष्ट रूप दिखाई पड़ा। भक्तिकाल के दौरान कबीर, सूर और तुलसी की कृतियों ने हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध किया। तत्पश्चात बिहारी, केशव और घनानन्द सरीखे कवियों ने हिन्दी की विविध बोलियों विशेषकर ब्रज और अवधी को साहित्यिक रूप प्रदान किया। प्रेस के आगमन के साथ हिन्दी में गद्य लेखन का विकास हुआ और यहीं से हिन्दी खड़ी बोली अपने मूल ढांचे में अवतरित हुई। यद्यपि आरंभ में शिव प्रसाद 'सितारेहिन्द' और लक्ष्मण सिंह के बीच खड़ी बोली हिन्दी के स्वरूप को लेकर विवाद रहा लेकिन भारतेन्दु हरिशचंद्र और फोर्ट विलियम के अध्यापकों सदल मिश्र एवं लल्लू लालजी के अथक प्रयासों से हिन्दी खड़ी बोली उस रूप में आयी जिसकी परिकल्पना हमारे संवैधानिक प्रावधानों में की गयी है। इस संदर्भ में, महावीर प्रसाद द्विवेदी के अवदानों को नहीं भुला जा सकता

जिन्होंने हिन्दी को व्याकरणिक दृष्टि से परिष्कृत एवं परिमार्जित किया। आगे चल कर स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व करते हुए महात्मा गांधी ने हिन्दी भाषा की वकालत राष्ट्र भाषा के रुप में की।

18वीं और 19 वीं सदी में भारत में बड़ी संख्या में दूसरे देश से मजदूर लाये गए। इस दौरान हिन्दी मे बहुआयामी परिवर्तन देखा गया। गुलामी की जंजीरों को उखाड़ फेकने में हिन्दी की बड़ी भूमिका रही है। इसने लोगो को आपस मे जोड़ने का काम भी किया है। प्रेमचंद्र, निराला, जयशंकर प्रसाद, रामचंद्र शुक्ल, मुक्तिबोध आदि रचनाकारों ने हिन्दी को एक अलग मुकाम तक पहुँचाया है।

हमारे पूरे सरकारी कार्यालय में भी आज हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है। लेकिन उत्तर पूर्वी राज्यों एवं दक्षिणी राज्यों में कहीं न कहीं अंग्रेजी हम पर आज भी हावी है। निडर प्रयास ही इस गुलामी से

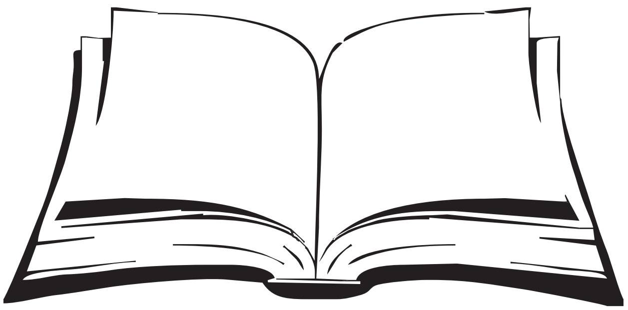

छुटकारा दिला सकते हैं। ''अंग्रेज चले गए पर अंग्रेजी छोड़ गए''— इस युक्ति पर विचार किया जाए तो आज भी अंग्रेजो ने भाषाई गुलाम बनाए रखा है। हिन्दी हमारी संस्कृति है, हमारी अपनी अभिव्यक्ति है और यह हमारी पहचान है, इसे प्रयोग करने में हमे थोड़ा भी शर्मसार नहीं होना चाहिए।

विडम्बना यह है कि लोग हिन्दी जानते हुए भी इसका प्रयोग करने से कतराते है। उन्हें लगता है कि हिन्दी को जीवन शैली मे लाने से उनका कद छोटा हो जाएगा। जहाँ तक कुछ राज्यों की बात है, वहाँ भी हिन्दी को अनिवार्य करना चाहिए। हिन्दी उतनी कठिन भी नहीं कि इसे सीखना मानो हिमालय की चढ़ाई करना हो। हमें अपनी राष्ट्रीय भाषा को हमेशा सीने से लगा कर रखना चाहिए क्योंकि इसके वजूद से ही हमारा अस्तित्व है।

आज हिन्दी की पहचान दूसरे देशों में भी हो रही है। इसका विकास सर्वप्रथम हमारे देश में होने की आवश्यकता है। पुराने समय से चली आ रही प्रथा को खत्म करना होगा। हिन्दी के प्रयोग को आदेश नहीं अपितु अपनी संस्कृति की मूर्ति मानकर इस क्षेत्र में कार्य करना होगा। लोगों के मन में अंग्रेजी इस कदर बस चुकी है मानो बिना उसके जीवन संभव ही नहीं है। कोई अन्य भाषा जानने में हर्ज नहीं है लेकिन अपनी हिन्दी को नजरंदाज करना अपनी गरिमा, संस्कृति आदि को ठेस पहुँचाना होगा। बीते

इतिहास में हिन्दी को विकसित करने के क्रम में, उठाए गए कदम को न भूलते हुए हमें इसे सींचते हुए अग्रसर रखना होगा। हिन्दी जड़ की भांति हमारे संस्कृति रूपी पेड़ को अपना वजूद कायम रखने में मजबूती प्रदान करती है। भारतीय होने के नाते इसे और मजबूत करने के लिए इसकी जड़ों को फैलाना होगा। हिन्दी भाषी समाज और विद्वानों की यह कोशिश होनी चाहिए कि हिन्दी की जड़ों को सुरक्षित रखा जाए। इस क्रम में, हिन्दी स्थानीय बोलियों और भाषाओं को खत्म करने का जरिया न बने इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। हिन्दी को स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक विभिन्नताओं को सुरक्षित रखने का कारक बनना होगा।

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

माँ

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''
माँ वह नारी है जो हम सब को
अपने खून से सिंचित करती है।
माँ वह नारी है जो हमें हर
कठिनाइयों का सामना करना सिखाती है।

माँ वह नारी है जो हमें सदा
सत्य के पथ पर चलना सिखाती है।
लेकिन वास्तव में क्या हम
उनकी इन सीखों पर चलते है?
उनके बुढ़ापे का सहारा बन कर
उन्हें श्रद्धा के शीर्षासन पर बैठाते हैं?
यदि सही, तो हमारी दुनिया में
क्यों इतने वृद्धाश्रम बनाए गए हैं?
क्यों हमें अपने माँ की बेसहारापन
की चीखें सुनाई पड़ती हैं।
फिर भी माँ सदा ही अपनी झोली से
अपने बच्चों पर आशीर्वाद बरसाती है
और परमेश्वर से दुआ मांगती है
कि हे देवता! हमारे बच्चों को सदा सुखी रखें।
माँ वह देवी हैं जिनके पास कोई
ईर्ष्या नहीं बल्कि अपार करूणा का सागर है।

बड़े ही स्नेह से, प्रेम से अपनी कोख
में हमें पालती है,
अत: है स्नेहमयी, प्रेममयी, करूणामयी माता
आपके लिए एक ही स्तुति है-

''या देवी सर्वभूतेषू शक्तिरूपेण संस्थिता
नम: तस्येह, नम: तस्येह, नम: तस्येह नमो नम:
या देवी सर्वभूतेषू मातृरूपेण संस्थिता
नम: तस्येह, नम: तस्येह, नम: तस्येह नमो नम:
या देवी सर्वभूतेषू मानूरुपेण संस्थिता
नम: तस्येह, नम: तस्येह, नम: तस्येह नमो नम:।

श्रीमती लिपिका दास
सहायक लेखा अधिकारी

अमावस का दृढ़संकल्प

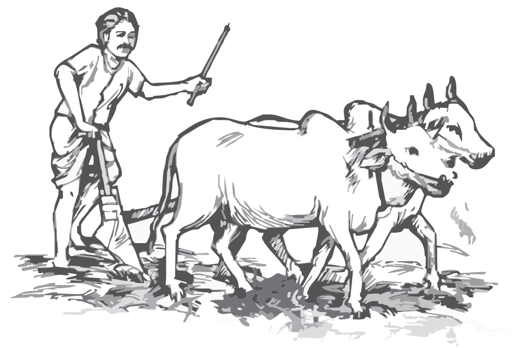

एक गरीब किसान था। किसान इतना गरीब था कि उसके पास अपना खेत भी नहीं था, जिस पर वह खेती कर अपने बच्चों का भरण पोषण कर सके। वह जमींदार लोगों के खेत मे हल चलाता था और बदले मे उसे थोड़ा अनाज एवं पैसे मिलते थे। अनाज एवं पैसे इतने कम पड़ते थे कि एक समय का भोजन भी परिवार के लिए कम पड़ता था।

धीरे-धीरे समय बीतता गया। किसान के बच्चे बड़े हुए और अपने माता - पिता के काम मे हाथ बंटाने लगे। किसान के बच्चों में एक बच्चा जिसका नाम अमावस था। अपने परिवार की गरीबी को देखते हुए उसने कुछ अलग सोचा। एक दिन अमावस मजदूरी करने के लिए एक जमींदार के घर गया। जमींदार अमावस की लगन एवं मेहनत को देख कर काफी खुश हुआ। कुछ दिन बाद एक दिन जमींदार ने अचानक अमावस से कहा—''क्या तुम सरकारी नौकरी करना चाहते हो?'' अमावस ने बिना कुछ सोचे समझे कहा - ''हाँ करूंगा''। पर जमींदार ने कहा ''उसके लिए तुम्हें अधिकारी के घर पर नौकर का काम करना पड़ेगा''। इतना सुन कर अमावस सोच मे पड़ गया, पर अपने परिवार की बदहाली को देखते हुए उसने अपने आप को मना लिया और जमींदार से बोला—''हाँ साहब नौकर का काम कर लूँगा, लेकिन मुझे सरकारी नौकरी मिलनी चाहिए''। जमींदार ने हँसते हुए कहा—''उसकी चिंता मत करो, तुम्हारी लगन और मेहनत तुम्हें बहुत आगे ले जाएगी।'' इतना कह कर जमींदार ने अमावस को अगले दिन अपने घर पर बुलाया।

अगले दिन अमावस जमींदार के घर पहुँचा। जमींदार ने अमावस को देख कर हँसते हुए कहा—''आओ आओ अमावस आओ, तुम आ गये।'' इतना कह कर जमींदार ने उस अधिकारी से बात की जिसके पास अमावस को भेजना था। अधिकारी से बात कर जमींदार ने अमावस को मुजफ्फरपुर के लिए रवाना कर दिया।

दिये गये पते के अनुसार अमावस मुजफ्फरपुर पहुँचा और उस अधिकारी से बात की जिस के पास उसे काम के लिए भेजा गया था। अमावस बिना किसी लोभ लालच के अधिकारी के घर पर काम करने लगा, बस मन मे ये सोच कर कि एक ना एक दिन उसे सरकारी नौकरी मिलेगी और वो अपने घर परिवार की दयनीय स्थिति को सुधार पाएगा।

कुछ दिन बाद अधिकारी अमावस के लगन और परिश्रम को देख कर खुश हुआ और अगली सुबह अमावस को अपनी गाड़ी मे बैठा कर अपने दफ्तर ले गया और अपने निजी सहायक को बुला कर एक पत्र बनवाया। जिसमें लिखा गया कि आप को आदेशपाल के पद पर वेतनमान रू 155-190/- मासिक वेतन रू 155/- एवं सरकार द्वारा दिये जाने वाले सभी प्रकार के भत्ते देय होंगे। पत्र लिखे जाने के बाद अधिकारी ने अपने हस्ताक्षर किए और एक प्रति अमावस को दे दी और कहा—''आज से तुम सरकारी कर्मचारी हो, जितनी ईमानदारी से तुम ने मेरी सेवा की है उतनी ही ईमानदारी से अपनी नौकरी की सेवा करो और आगे बढ़ो''।

नियुक्ति पत्र मिलते ही अमावस खुशी से उछल पड़ा और अधिकारी से कहा—''साहब कई दिन से घर नहीं गया हूँ, घर जाना चाहता हूँ''। अधिकारी ने मुस्कुराते हुए कहा—''हाँ, क्यों नहीं, जाओ जाओ''। इतना सुन कर अमावस खुशी-खुशी अपने घर के लिए रवाना हो गया। घर पहुँच कर अपने माता-पिता का आशीर्वाद लिया और कहा—''बाबू जी मुझे सरकारी नौकरी मिल गयी है अब मुझे रू 155/- मिलेंगे, अब सब कुछ ठीक हो जाएगा''। इतना सुन कर घर परिवार के सभी लोग काफी खुश हुए।

नौकरी मिलने पर भी अमावस की इच्छा पूरी नहीं हुई। नौकरी करते हुए उचित माध्यम से अनुमति प्राप्त कर मैट्रिक, इंटर तथा स्नातक पास करते हुए आज वह शाखा अधिकारी के पद तक जा पहुँचा है। फिर भी उस अमावस मे वही मेहनत और लगन कूट कूट कर भरी हुई है, जिसके कारण वह आज इस ऊँचाई तक जा पहुँचा है।

आज अमावस अपने दम पर अपने घर परिवार से लेकर सभी रिश्तेदारों को शारीरिक एवं वित्तीय रूप से इतनी मदद कर चुका है कि आज सभी लोग अमावस के आभारी हैं।

इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि कैसे एक गरीब किसान का बेटा अपनी मेहनत, लगन और अपने दृढ़संकल्प को मन में रख कर उस ऊंचाई तक जा पहुँचा जिसे सिर्फ उसने सपने में देखा था।

धनेश कुमार

डी. ई. ओ.

इश्तेहार

शहर के जर्रे-जर्रे में इश्तेहार ये चस्पा है,
इंसान ये कौन है, औलाद ये किसका है।

तन से ये श्याम है, धूप में ही खिलता है,
कद से ये लंबा है, आसमान को छूता है।

कर्म इसका मजहब है, ईमान का ये पक्का है
व्यक्तित्व से ये सौम्य है, किन्तु अलफाज का ये कड़ा है।

रंजिश इसकी किसी से नहीं, खुद से ही लड़ता है,
खुद में ही खोया है, जाने खुद में क्या पाया है।

नन्हा है शायद, खानाबदोश इसकी जात है,
चलना कहीं से भी शुरू करे, मंजिल तो इसकी रात है।

शहर के जर्रे-जर्रे में इश्तेहार ये चस्पा है,
भीड़ इसकी कौम है, भीड़ का ही ये हिस्सा है।

अतुल कुमार
लेखाकार

कद्दू (व्यंग्य)

बहुत शोर शराबे के कारण मेरी नींद एकाएक टूट गयी। मुझे लगा कि शायद भूकंप आ गया। ऐसे भी हमारे नेता भाषणों के द्वारा आजकल भूकंप लाने की बात किया करते हैं। खैर छोड़िए इन नेताओं की बातों को, इन लोगों का अब तो भरोसा ही नहीं रहा।

मैं शोर शराबे का कारण पता करने के लिए नीचे जाने लगा। जब मैं लिफ्ट के पास पहुँचा तो वहाँ बड़े बड़े शब्दों में लिखा था—''ऊर्जा की बचत करें''। लिफ्ट तो ऐसे भी खराब रहती है और इन शब्दों ने मेरा मूड भी खराब कर दिया। शर्मा जी पिछले बारह दिनों से घर पर नहीं थे और उनके घर के सारे बल्ब जल रहे थे तब उन्हें किसी ने ऊर्जा की बचत का ज्ञान नहीं दिया था। दुर्भाग्यवश लिफ्ट खराब ही थी तो मुझे सीढ़ी से नीचे जाना पड़ा।

मालूम करने पर पता चला कि किसान हँगामा कर रहे हैं क्योंकि उनको कद्दू के सही दाम नहीं मिल रहे हैं। मात्र एक रूपये किलो कद्दू बिक रहे हैं। मैं सोच में पड़ गया। पिछले चार पाँच दिन पहले जब मैं अपने दोस्त के यहाँ बेंगलुरू गया था तो कद्दू 40 रूपये किलो बिक रहे थे। मुझे अब समझ में आ गया कि क्यों हमारे देश को विभिन्नताओं का देश कहा जाता है। एक को खाने को नहीं मिलता और दूसरे से खाया नहीं जाता।

जब मैं सड़क पर आया तो पूरा सड़क कद्दूओं से भरा पड़ा था। लोगों ने अपना विरोध जताने के लिए कद्दू फेंक कर सड़क जाम कर दिये थे। सड़क के दोनों तरफ बहुत दूर तक गाड़ियों का काफिला लगा हुआ था। ऐसे भी जाम लगना इस शहर के लिए कोई नयी बात नहीं हैं। कभी-कभी जब शाम में मुझे जाम नहीं मिलता तो मैं सोच में पड़ जाता हूँ कि मैं दूसरे शहर में तो नहीं आ गया। इस गलतफहमी को दूर करने के लिए मुझे दुकान में लगे बोर्ड को देखना पड़ जाता है। इस जाम करने वाली भीड़ में मुझे लल्लनजी दिखाई पड़े। लल्लन जी छोटी-मोटी राशन की दुकान चलाते हैं। उनके हाथ में बड़ा सा डण्डा था और वो जोर-जोर से चिल्ला रहे थे कि सभी गाड़ियों की हवा निकाल दो। कुछ लोग उनका साथ भी दे रहे थे। ये वही लल्लन जी थे जिनकी पुत्री का इंटरव्यू पिछले साल असामाजिक तत्वों द्वारा रेल रोके जाने के कारण छूट गया था। मुझे आज इसका आभास हुआ कि असामाजिक तत्व इसी समाज के हिस्से हैं जो सिर्फ मौके की तलाश मे होते हैं।

सड़कें पूरी तरह से कद्दूओं से भरी हुई थी। पूरी सड़क हरी हरी हो गयी थी। मुझे कद्दूओ के प्रति दया की भावना आ रही थी। आखिर, क्यों इन्होंने कद्दू को निशाना बनाया? क्या इसके रंग के कारण इनको निशाना बनाया गया? पिछले महीने तो ''लाल टमाटर'' के दाम कम हुए थे उस वक्त लोगो का गुस्सा कहाँ था। क्या चुनिन्दा रंगो के प्रति ये विद्रोह सही है?

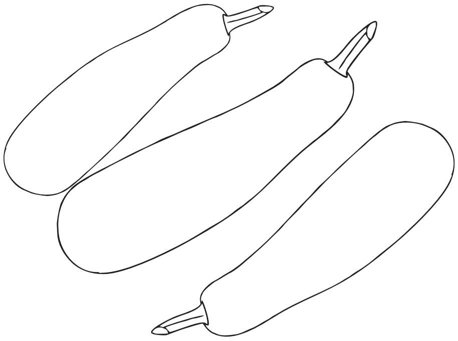

मुझे मीडिया वाले भी नहीं दिखे। आज ये मीडिया वाले कहाँ गायब थे। आज कल तो वो हर घटना मे रंग धर्म खोजते रहते हैं। फिर आज ये मीडिया वाले मौन क्यों हैं ? मुझे तो पूरा विश्वास था कि मीडिया वाले जरूर इसे ब्रेकिंग न्यूज बनाएँगे मेरा विश्वास शाम होते होते एक भारतीय मतदाता की तरह टूट गया।

एक दिन बाद जब मैं घूमने के लिए निकला तो एक बच्चा कद्दू बेच रहा था। मैंने पूछा कि छोटू ये कद्दू किस भाव के हैं। छोटू बोला 40 रूपये का एक कद्दू। मैं निरूत्तर हो गया। मैंने एक कद्दू लिया और उसका जूस पीने चला गया। ऐसे भी बाबा ने समस्या के समाधान के लिए कद्दू का जूस पीने को बोला था।

विकास कुमार
लेखाकार

दूसरा शहर

निशा... निशा...दो तीन बार लगातार यह आवाज गूँजती रही। उसे लगा की यह आवाज जानी पहचानी सी है पर उसका यह वहम जल्द ही टूट गया जब उसने पीछे से आती आवाज का जवाब देना चाहा।

अपने शहर में लौटे निशा को एक महीने से ज्यादा समय हो चुका था। उसका अपना शहर जो भागता ही रहता है। इस भागने में भी उसे चैन मिलता था। ढाई साल की बेचैनी से अब जा कर उसे राहत मिली।

करीब ढाई साल पहले दिसम्बर महीने के अंतिम दिनों में निशा उस दूसरे शहर गयी थी। घर से कभी दूर न रहने वाली निशा को पता नहीं कितना लंबा समय उस दूसरे शहर में बिताना था। भीड़ से उसे डर नहीं लगता पर उस दूसरे शहर की शांति में भी डर लग रहा था। उसका ऑफिस पहाड़ों के बीच था। कहाँ उसका शहर ठेठ था और कहाँ प्रकृति के बीच रचा बसा वह शहर। कई दिनों निशा यही नहीं समझ पाई कि वह इस नीरवता से कैसे जूझेगी। कैसे बड़े शहर की भाग-दौड़ और इस शहर की लगभग ठहरी जिंदगी के बीच ताल मेल करेगी।

अपने ऑफिस का पहला दिन उसे अच्छे से याद है। वहाँ सभी उसे सहज महसूस करवाने की कोशिश कर रहे थें। कोई घर की बात करता कोई पढ़ाई की। धीरे-धीरे वह खुद को संभालती हुई आगे बढ़ने लगी। समय के साथ उसका द्वंद कम हो रहा था। उसे वह दूसरा शहर रास आने लगा था। कौन किसको खुद में ढाल रहा था - इस उधेड़बुन में वह नहीं पड़ना चाह रही थी। बस चलते रहो, बहते रहो - ये उसने उस दूसरे शहर से सीखा था।

जीवन अपने आप में एक उत्सव है-यह मूलमंत्र उसने वहीं से सीखा। आज वह अपने शहर में आ तो चुकी है पर अब भी वह कहीं न कहीं उस शहर को याद करती रहती है। वहाँ का खुला आजाद जीवन, बे-सलीके, बे-तरतीब पर जीवन जीने की कला में महारत लोग। निशा का मन अब उस बे-तरतीबी में पूरी तरह रम चुका था।

निशा ऑफिस की सीढ़ियों पर थी, एक आवाज आई। कोई उसका नाम पुकार रहा था पीछे देखा तो विश्वास सर थे। उसे एक झटका लगा, वह दूसरा शहर नहीं बल्कि उसका अपना था। उसने तय कर लिया कि अब वह दुबारा नहीं भटकेगी, आखिर ढाई सालों में उसने यही तो सीखा था......उस 'दूसरे शहर' से।

प्रियंका संजीव सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

भित्तिचित्र

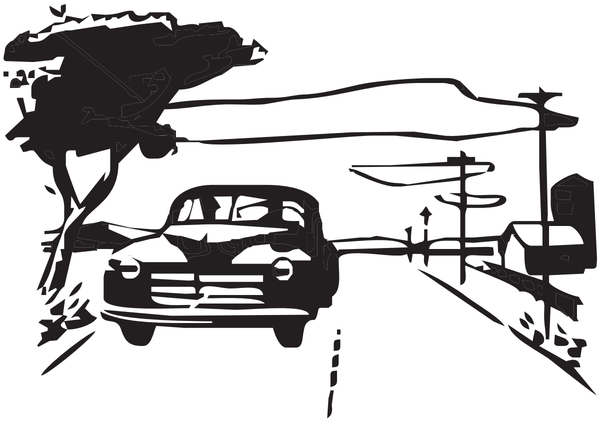

'कंजराडीह गाँव पहुँचने में करीब चार घंटे लगेंगे।' मैंने कार स्टार्ट करते हुए मधु से कहा। मधु बगल की सीट पर बैठी गूगल मैप को बड़े गौर से देखे जा रही थी। गूगल मैप को जूम कर मुझे दिखाते हुए चहककर बोली, 'गाँव से हम नीलकोठी रोड से लौटेंगे। यह रास्ता थोड़ा लंबा पड़ेगा। पर नीलकोठी रोड न देखी तो समझो कंजराडीह आना बेकार। सड़क के दोनों ओर गुलमोहर के विशाल वृक्ष, उनकी शाखाएं मानों एक दूसरे से गुँथी हुई। अभी तो मई माह है। गुलमोहर के फूल खिले होंगे। तुम्हे लगेगा कि लाल फूलों का एक लम्बा चँदवा सड़क के ऊपर तान दिया गया है।'

कंजराडीह गाँव का प्रकृति चित्रण मेरे लिए नया नहीं है। यह हमारे पाँच वर्षों के दांपत्य जीवन के दैनिक वार्तालाप का अभिन्न अंग हैं। उस गाँव में मधु का ननिहाल है। उसका बचपन वहीं बीता। बारह वर्ष की उम्र में वह अपने पिता के पास रहने दिल्ली चली गई थी। दिल्ली जाकर स्कूल-कॉलेज में ऐसी उलझी कि दुबारा नाना के गाँव जाना न हुआ। गाँव भले ही पीछे छूट गया हो पर उस गाँव के मिट्टी की गंध, वहाँ की हवा की शीतलता, पेड़ों की छाँव और वहाँ के लोगों से मिले स्नेह को कभी भूल नहीं पाई।

आज करीब पंद्रह वर्षों के बाद वह नाना के गाँव जा रही थी। उसके नाना का देहांत हुए एक अरसा बीत चुका था। उसके मामा भी दिल्ली में ही बस गए थें। पुश्तैनी मकान सालों से खाली पड़ा था। गाँव में कोई सगा-संबंधी नहीं था। पर मधु अपने बचपन की जड़ें तलाशती, अपने बचपन की मधुर अनुभवों को एक बार फिर से जीने की चाह लिए मेरे साथ कंजराडीह जा रही थी।

मैं कंजराडीह पहले कभी नहीं गया था। मेरा जन्म दिल्ली में हुआ। मेरी शिक्षा-दीक्षा भी महानगरों में ही हुई। ग्रामीण परिवेश और वहाँ की लोक संस्कृति से मैं अनभिज्ञ था। परंतु मधु ने गाँव-घर का ऐसा विशद वर्णन किया कि मेरे मन-मस्तिष्क में वहाँ की एक तस्वीर-सी खींच गयी थी। वहाँ का सरकारी स्कूल, स्कूल के मैदान में आम के दो पेड़, तालाब-पोखर, पुलिया, कच्चे मकान, झोपड़ियों के पीछे खुले खेत, खेतों के बीच मेंड़ की पगडंडी। इनकी आकृतियाँ मानों मेरी कल्पना में सजीव हो उठी थीं।

मधु कार की सीट पर सिर टिकाए खिड़की से बाहर झांक रही थी। उसके चेहरे से प्रफुल्लता टपक रही थी। वह खुशी से खिलते हुए बोली, 'पहले सिंधु के घर जाऊँगी।"सुना है उसकी शादी इसी गाँव में हुई है। नहीं--नहीं। स्कूल पहले पड़ेगा। सबसे पहले वहीं जाऊँगी।

उत्साह से विचार और कथन के सूत्र आपस में उलझ रहे थें।

सिंधु मधु की बचपन की सहेली थी। कंजराडीह पर्व का शायद ही कोई अध्याय है, जिसमें सिंधु की भूमिका न हो। सिंधु के अलावा मैं अन्य कई अनदेखे पात्रों से भी परिचित था।

सिंधु के पिता ब्रजनंदन सिंह बड़े कड़क थे और उसकी माँ बेहद दयालु। पुन्नी मौसी मधु को ट्यूशन पढ़ाती थीं। दीपू ने एकबार ढेले से मधु का सिर फोड़ दिया था। एक पगलैट मास्टर थे जो हमेशा अंग्रेजी में अनर्गल बकते रहते थे। मधु उसे देखते ही डरकर भाग खड़ी होती थी।

मधु कार के डैशबोर्ड पर मोबाईल रखते हुए बोली, 'जानते हो गाँव के कच्ची तालाब के किनारे पेठिया लगता है। आज शनिवार है। आज भी लगेगा। हमलोग पेठिया भी जाएंगे'।

मेरे पूछने पर कि 'पेठिया' क्या होता है, वह ठठाकर हँस पड़ी।

''शहरी बाबू। पेठिया मतलब हाट या बाजार। सप्ताह में एक या दो बार लगता है। पेठिया में सब्जी, फल, अनाज, मांस-मछली, कपड़े, बर्तन सब मिलते हैं।''

''गाँव का मॉल। क्या कहती हो?'' मैंने चुटकी ली।

वह बोली, ''मॉल से भी बेहतर। पेठिया में आपको दांत चमकाने वाले मंजन विक्रेता से लेकर, जादूगर, मदारी, ज्योतिष सब मिल जाएंगे।''

चार घंटे ड्राइव करने के बाद हम कंजराडीह गाँव पहुँचे। ग्राम्य जीवन के दृश्य जो अब तक मेरी कल्पना में थे उनसे साक्षात्कार करने का अवसर था। सरकारी स्कूल के सामने खड़े होकर मैं आम के दो पेड़ों को ढूँढ रहा था।

मधु अंचभित। आश्चर्य और विषाद से उसका मुख खुला रह गया। वह स्कूल का एक भवन दिखाती

बोली, 'ठीक इसी जगह आम के दोनों पेड़ थे। अब दो नए भवन दिख रहे हैं, ये पहले नहीं थे। स्कूल का मैदान कितना छोटा हो गया है।' अतीत की समाधि पर खड़ा वर्तमान गर्व से हमें मुँह चिढ़ा रहा था।

सिंधु तो बमुश्किल मधु को पहचान पाई। बचपन से जुड़ी ज्यादातर बातें वह भूल चुकी थी। इसमें सिंधु का दोष नहीं था। मधु जब नए परिवेश में गई तो अपने साथ बाल्यकाल की स्मृतियों को भी साथ ले गयी थी। परंतु सिंधु का परिवेश नहीं बदला था। समय के साथ मधु से जुड़ी स्मृतियाँ लुप्त होती गई। समय के साथ गाँव की सूरत भी बदली है। घरों के पीछे खेत-खलिहान और पगडंडियों को मिटाकर पक्के मकान बना लिए गए। घरों के सामने जहाँ मवेशी बाँधे जाते थें, वहाँ परचून की दुकानें सजी थीं।

सिंधु और मधु की बातचीत से पता चला था कि पुन्नी मौसी घरबार बेचकर अपने बेटे के पास रहने पटना चली गई। दीपू गाँव के अन्य लड़कों के साथ मजदूरी करने पंजाब गया है। पगलैट मास्टर तो बहुत पहले मर गए। मरने के दिन भी अंग्रेजी में बड़बड़ाते रहे।

कच्ची तालाब के पास जाकर देखा, वहाँ कूड़े का अंबार लगा था। पास ही किसी स्थानीय बुजुर्ग से मैंने वहाँ लगने वाले पेठिया के बारे में पूछा तो वे हँसते हुए बोले, 'पेठिया तो गुजरे जमाने की बात है बाबू। आजकल चौक-चौराहे पर इतनी सारी दुकानें खुल गई हैं। नजदीक के छोटे शहरों में भी बड़े-बड़े शोरूम, मॉल आदि खुल गए हैं। अब पेठिया कहाँ। देखते नहीं, इस खाली पड़ी जमीन की दुर्गति। अब लोग यहाँ कूड़ा-कचड़ा फेंकते हैं।'

मुझे लगा मेरे स्मृति पटल से फल-सब्जियों की छोटी-छोटी दुकानें, दंतमंजन विक्रेता, जादूगर, मदारी, ज्योतिष सभी के चित्र हठात पोंछकर साफ कर दिए गए हैं। मधु के चेहरे पर क्षोभ की रेखाएँ उभर आई।

भूत और वर्त्तमान के द्वंद्व युद्ध में वह स्वयं को पराजित महसूस कर रही थी।

मैंने उसे दिलासा देते हुए कहा, 'गाँव में बिजली आ गई। पक्के मकान बन रहे हैं। गाँव तेजी से विकास कर रहा है।' वह फीकी हँसी के साथ बोली, 'जब विकास का पहिया घूमता है तो प्रकृति और लोकजीवन कुचले जाते हैं।'

फिर कुछ देर ठहरकर बोली, 'चलो वापस चलें।'

मैंने कार का दरवाजा खोलते हुए कहा, 'नीलकोठी रोड से लौटते हैं।'

मधु ने हामी भरी।

हमारी कार नीलकोठी रोड पर दौड़ रही थी। सड़क के दोनों ओर मकान और पक्की दुकानों की कतारें थी। छतों और दीवारों पर बड़े देशी-विदेशी ब्रांडेड चीजों के होर्डिंग्स लगे थें। सड़क पर अनियंत्रित भीड़ और गाड़ियों की ठेलमठेल।

गुलमोहर से आच्छादित सड़क को ढूंढती मेरी नजरें नंगे आकाश पर ठहरी थी।

मैंने मधु को एक नजर देखा। वह आँखे भींचे, सिर झुकाए बैठी थी, मानों यथार्थ से मुँह फेरकर अपनी स्मृति वीथिका में अंकित अतीत के अंतिम भित्तिचित्र की रक्षा में जुटी हो।

चन्दन कुमार
हिन्दी अधिकारी

प्रधान महालेखाकार महोदया की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लेते अधिकारीवृंद

वार्षिक खेलकूद के दौरान विजेता प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए उपमहालेखाकार (प्रशासन) श्री गौतम अल्लादा

कार्यालय में आयोजित वार्षिक खेलकूद में भाग लेते हुए प्रतिभागियों की झलकियाँ।

भूस्वर्ग कश्मीर या पत्थरों की बारिश

हम मई 2018 में श्रीनगर घूमने गए थें, लेकिन पत्थरबाजी का डर हमारी पूरी यात्रा के दौरान हमें कहीं न कहीं सताये जा रहा था। जब हमारी बस रात 8:30 बजे जम्मू से श्रीनगर राष्ट्रीय मार्ग पहुँची तो अचानक से पत्थरों की बौछार शुरु हो गयी। हमारे बस चालक ने बड़ी बुद्धिमता से हमें बचा लिया और बस को पेट्रोल पम्प पर खड़ा कर दिया। वहाँ पर स्थानीय नौजवान ''जौबै'' पहन कर निर्विकार रुप से ऐसे खड़े थे जैसे कुछ हुआ ही ना हो। 15 मिनट के बाद हम लोग पुन: श्रीनगर की ओर चल पड़े।

दूसरे दिन हम लोग श्रीनगर घूमने गए। हम सभी ने वहाँ की सुंदरता का आनंद लिया। क्योंकि मैं पहली बार कश्मीर गया था तो मैं अपनी आंखों से वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का भरपूर अनुभव कर लेना चाहता था। श्रीनगर भ्रमण के दौरान हम लोग औरंगजेब द्वारा निर्मित हजरत बल मस्जिद के दर्शन करते हुए श्रीनगर स्थित सम्राट अशोक के पुत्र द्वारा निर्मित शंकराचार्य मंदिर के भी दर्शन किए। इसका निर्माण लगभग 200 ई.पू.किया गया था। यह लगभग 300 मीटर की ऊँचाई पर बनाया गया है। ऊँचाई पर निर्मित होने के कारण मंदिर से पूरा श्रीनगर बहुत ही मनमोहक नजर आता है। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो पूरा श्रीनगर प्रकृति की गोद में समाया हो।

यहाँ के बाद हम लोग डल झील की ओर गए। डल झील की सुंदरता देखते ही बनती थी। भारत की सबसे सुंदर झीलों मे इसका नाम क्यों लिया जाता है वो अब समझ में आ रहा था। पर्यटक जम्मू कश्मीर आए और डल झील न देखे ऐसा हो ही नहीं सकता। विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां झील की सुंदरता में चार चाँद लगा रही थी। डल झील देखने के बाद हम लोगों का दल चार बगीचे की ओर चल पड़ा। हमने चश्माशाही, निशात बाग, शालीमार बाग और नासिमबाग के भी दर्शन किए जो मुगल बादशाह अकबर की इच्छानुसार बनाया गया था। मुगल बादशाह का प्रकृति के प्रति कितना आकर्षण था यह हमे मालूम हुआ। 400 साल पूर्व

मुगल सम्राट का प्रकृति के प्रति प्रेम की पुष्टि इस बाग की सुंदरता से हो रही थी। सांयकाल को अस्तचलगामी सूर्य एक अलग ही दृश्य प्रस्तुत कर रहा था।

तीसरे दिन हमलोग सोनमार्ग जीरो प्वाइंट की ओर भ्रमण करने को चल पड़े। वहाँ दूर- दूर तक फैली सफेद बर्फ की चादरें और हिमशीतल हवाएँ अभी भी मेरे जेहन में ताजा है। अब हमें समझ आया कि क्यों विदेशी पर्यटक शीतकाल में हमारे देश का भ्रमण करते है। स्केटिंग, स्नो बाइक और स्नो फॉल आदि क्रीड़ा और मनोरंजन के लिए विदेशी पर्यटक यहाँ की ओर रुख करते है।

चौथे दिन खिलान मार्ग गए। खिलान मार्ग जाने के दो चरण हैं। एक गंडोला से दूसरा रोप वे के द्वारा। गंडोला से कुड्ग्दूर जाने के लिए 740 रुपये और कुड्ग्दूर से अपारवथ जाने के 940 रूपये हर पर्यटक से लिए गए। हमनें यह महसूस किया की विदेशी पर्यटकों मे रोप वे के प्रति सर्वाधिक आकर्षण है।

पाँचवे दिन हमारे पहलगांव पहुँचने के बाद होटल से प्राकृतिक नजारा देखते ही बन रहा था । इसे देख कर हम मंत्रमुग्ध हो गए। हमारा मन नहीं चाह रहा था कि हम कश्मीर से विदा लें।

आखिर में हमने कटरा स्थित वैष्णो देवी मंदिर के भी दर्शन की योजना बनाई। कभी कभी मैं यह सोचता हूँ कि अगर कश्मीर में भ्रमण के दौरान पत्थरबाजी जैसी घटना घटित नहीं होती तो हमारी खुशी में चार चाँद लग जाते।

अमृत दत्त
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

'बेहया का जंगल' के मायने और प्रासंगिकता

(पद्मश्री कृष्ण बिहारी मिश्र के ललित निबंध 'बेहया का जंगल' की समीक्षा)

अपनी रचनाधर्मिता से कलकत्ता नगरी की उर्वर साहित्यिक भूमि को सींचने वाले कृष्ण बिहारी मिश्र को उनके अतुल्य लेखन और योगदान को सम्मानित करते हुए भारत सरकार ने हाल ही में पद्मश्री से विभूषित किया। हिन्दी भाषा और साहित्य का कलकत्ता से गहरा संबंध रहा है। चाहे हिन्दी भाषा का अध्ययन-अध्यापन आरंभ करने वाला फोर्ट विलियम कॉलेज हो, मुक्तछंद के प्रणेता सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हों, हिन्दी पत्रकारिता के स्तम्भ को सुदृढ़ करने वाले विशाल भारत और मतवाला जैसे हिन्दी के आरंभिक पत्र हों अथवा हिन्दी में पहला एम.ए. करने वाले कलकत्ता विश्वविद्यालय के नलिनी मोहन सन्याल हो,सभी कलकत्ता और हिन्दी की अंतरंगता की कथा कहते हैं। इस कथा की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रुप में कृष्ण बिहारी मिश्र और उनका साहित्य है। घर की छोटी सी लाइब्रेरी को टटोलते हुए उनका एक ललित निबंध हाथ लगा-बेहया का जंगल। आपातकाल या उसके बाद के दौर में लिखी गई यह रचना अपने भावात्मक पक्ष और वैचारिक दृष्टिकोण से जितनी उत्प्रेरक है, शिल्प के हिसाब से भी उतनी ही बेजोड़ है। निबंध पढ़ते समय बार-बार हजारी प्रसाद द्विवेदी के ललित निबंधों कुटज और शिरीष के फूल का स्मरण हो रहा था। कलात्मक दृष्टि से मिश्र जी के निबंधों को हजारी की परंपरा में रखना ज्यादा समीचीन लगता है। तत्कालीन संदर्भ के लिहाज से यह कृति चेतना को झकझोरने वाली तो है ही, वर्तमान सामाजिक-राजनैतिक परिदृश्य पर विहंगम दृष्टि डालने पर ''बेहया का जंगल'' अपनी रचनाधर्मिता और उद्देश्य में कालजयी प्रतीत होती है।

बेहया का जंगल पढ़कर अवसरवाद, अविरोध की साधना और बटगान जैसे शब्दों और अभ्युक्तियों से संदर्भ-सापेक्ष परिचय हुआ। साथ ही बेहया नामक पौधे को एक नए परिप्रेक्ष्य में समझने का मौका मिला। मुझे ठीक से याद है कि छुटपने में हुगली नदी के किनारे क्रिकेट खेलने जाते समय बेहया के पौधे से परिचय हुआ था। यह वही बेहया था जो पिताजी के जुबान पर आ जाया करता था, जब हम उनके हिसाब से कोई काम नहीं करते थे। यह बेहया तो जैसे हमारे लिए प्रसाद था, जिसके जुबान पर चढ़ते ही हमारे पीट जाने की आशंका समाप्त हो जाती थी, हालांकि इस शब्द का अर्थ हमें पता नहीं था। बाद में बड़ी माँ ने बेहया के पौधे का उदाहरण देते हुये समझाया कि यह एक ऐसा पौधा है, जिसे जहाँ-जब-जैसे फेंक दो, उग आता है, जड़ों के साथ फैल जाता है चारों ओर। न कोई शर्म न कोई हया। लेकिन यह बेहया स्वार्थसिद्धि और अवसरवाद का भी नमूना है, यह आलोच्य निबंध से पता चला। आपातकाल में सत्ता और विरोधी किस तरह अपने निजी स्वार्थों के लिए देश, जनता और संप्रभुता के साथ खेल खेल रहें थे, यह निबंध का मूल उत्स है। कृष्ण बिहारी

मिश्र लिखते हैं-''पूरा देश बेहया-वन के उल्लास में डूब गया है।'' स्पष्ट है कि तत्कालीन राजनैतिक प्रतिस्पर्धा के मध्य समस्त नैतिक मूल्यों और आचरण का लोप हो गया था। केवल एक ही इच्छा शेष थी-सत्ता-प्राप्ति और स्वार्थ-सिद्धि। इस वजह से राजनैतिक और सामाजिक गलियारों में ऐसे लोगो का वर्चस्व बढ़ता जा रहा था, जो लोलुप और हिंसक प्रवृति के थे। साथ ही यह प्रवृति सदाचार और निष्ठा जैसे मूल्यों को भी ग्रस रही थी। राजनीति में शर्म और मर्यादा जैसे शब्द अनाथ से हो गए थे।

बेहया का जंगल केवल तत्कालीन राजनीति तक सीमित नहीं था। इसने हमारी चेतना को अपने भय और भ्रम के जाल से आच्छादित कर लिया था। परिणामस्वरुप चाटुकारिता और जड़-मानसिकता इस युग की श्रेष्ठ कला बन चुकी थी। सत्य को हर हाल में स्वीकार कर दमन-अत्याचार के विरुद्ध बिगुल फूंकने के क्षण में लोग अपनी कोठरी बचाने पर आमादा थे । इसके लिए वे कितने निम्न-स्तर तक गिर सकते थे, इसकी कल्पना करना भी असंभव है। निबंधकार लिखते हैं—'सबको प्रीत करके सबसे मीठ बने रहने की हमारी स्पृहा हमें विरुप और प्रकाशहीन बना देती है।'' खुशामद की यह परंपरा सारे अपराधों और बेतुके निर्णयों पर मुहर लगाने का प्रमाणपत्र था। लेखक ने सबसे ज्यादा विरोधी खेमे पर चुटकी ली है। दरअसल इस खेमे से उन्हें किसी सकारात्मक पहल की उम्मीद थी, लेकिन यह उन्हें ज्यादा तकलीफ देता है कि सत्य को बचाने और लोकतन्त्र की रक्षा का भार ग्रहण करने वालों ने स्वयं ही कच्छप की खाल को ओढ़कर देश को सुरक्षित घोषित कर दिया है। लेखक की दृष्टि में यह बेहयाई की हद है। जब आँख का पानी मर जाता है, तब सही और गलत के बीच का फर्क मिट जाता है। ऐसे हालात ने व्यवस्था और व्यक्ति विशेष द्वारा की जाने वाली ज्यादतियों के प्रति मूक हो जाना भी बेहया हो जाना है। यह बेहयापन जब बढ़ता जाता है, तब सकारात्मक सोच और क्रांतिकारी प्रवृति का अस्तित्व समाप्त होने लगता है। लेखक के शब्दों में - 'बेहया दूसरे की बाढ़ को रोकनेवाली वनस्पति है। जहाँ एक बार इसकी जड़ जम जाती है, वहाँ दूसरी वनस्पति का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है।'

जयप्रकाश नारायण ने कहा था- ''भारत पराधीन गाँवों का स्वाधीन देश है।'' यह पराधीनता सोच की है,समझ की है, विचार और चेतना की है। विसंगति तो यह है कि गाँवों से होती हुई यह पराधीनता कस्बों, शहरों और महानगरों तक व्याप्त हो गई है। शिक्षा का अर्थ अक्षर-ज्ञान तक सीमित है और समझ का मतलब

जनप्रतिनिधियों और संचार माध्यमों द्वारा परोसे गए बगैर सत्यापित सच और झूठ। स्वतंत्र होकर सोचने, समझने और विचार करने की क्षमता पर किसी अन्य के विचार का पहरा लगा दिया जाता है। आकर्षक शब्दों और पदबन्धों के द्वारा वास्तविकता पर पर्दा डाला जाता है। आश्चर्य की बात तो यह है कि जनता लुभावने शब्दों के खिंचाव में फँसकर अपनी निज की मौलिक सोच को बिसार बैठती है, जिसका फायदा अवसरवाद के हिमायती जन प्रतिनिधि उठाते हैं। यह सारा तिकड़म चलता है ऐसे जन प्रतिनिधियों के खुद के वजूद को जिंदा रखने के लिए। लेखक ने अपने निबंध में स्पष्ट किया है-''समझ को बहकाना आसान नहीं होता, इसलिए तिकड़मी लोग, नासमझी को जिलाए रखना चाहते हैं ताकि ज्योतिहीन जनता उन्हें 'गुणी व्यक्ति' समझती रहे।'' इस नासमझी के कारण ही 'अविरोध की साधना का प्रभाव बढ़ा है अथवा यह कह सकते हैं कि बेहया के जंगल के बाढ़के फैलाव ने मानस को इस कदर जकड़ लिया है कि विरोध की गुंजाइश ही समाप्त हो गई है। लेकिन विडम्बना तो यह है कि अविरोध भी अब उत्सव सरीखा हो गया है।लोग अविरोध से हताश-निराश नहीं बल्कि प्रसन्न हैं। यह स्थिति बहुत ही घातक है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपनी कविता 'काठ की घंटियों' के द्वारा सुन्न पड़ी काठ की घंटियों से बजने अर्थात चेतनशील होने के लिए आवाज लगाई है, लेकिन जब हमारी शून्यता और उस शून्यता का कारण ही उत्सव और उत्साह का कारण बन जाये फिर उनके बजने की उम्मीद करना बेमानी है। निबंधकार ने अपनी रचना में इसी चिंता को प्रकट किया है।

पराधीनता, शोषण, दमन, अपराध और अनैतिकता जब गर्व का विषय होने लगे, फिर जिंदगी के फलसफे का अर्थ ही बदल जाता है। इस बदले फलसफे को ही कृष्ण बिहारी मिश्र ने 'बटगान' कहा है। उन्होंने बताया है कि निर्जन रास्ते पर भय को दूर करने के लिए बच्चे या बुजुर्ग जिस गीत को गाते थें, उसे बटगान कहा जाता है। लेकिन यह बटगान भय-मुक्ति का क्षणिक उपचार है। इससे अपने आप को संतुष्ट किया जा सकता है, लेकिन यह सुरक्षा भी दे, आवश्यक नहीं है। इसके बावजूद पूरा देश इस बटगान में लीन है। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, स्वास्थ्य जैसे मौलिक समस्याओं को समाप्त कर देने का बटगान जारी है। जनता भी इन आंकड़ो से उत्साहित हो बटगान में मगन है। लेकिन क्या बटगान सभी समस्याओं को हल कर देने में सक्षम है? वास्तव में यह बटगान एक छलावा है, जिसपर लेखक ने गहरा कटाक्ष किया है-''हमारी पीड़ा बहुत कुछ आज वैसी है जैसी उस गुरु-शिष्य की थी जिनमे से एक अंधा था और दूसरा बहरा। अंधा जब गुड़ मांगता था, बहरा ढेला पेश कर देता है। जनता रोटी मांगती है, स्वदेशी सरकार उसे पंचवर्षीय योजना देती है।'' लेखक का मूल मन्तव्य यह है कि समस्याओं से भागने या उनका महिमामंडन की जगह उनका निराकरण ज्यादा जरुरी है। लेकिन तत्कालीन परिदृश्य में यह भाव हाशिए पर था।

रचनाकार दूरदर्शी होता है जिसमें भविष्य के अंध-गर्भ में झाँकने की शक्ति होती है। कृष्ण बिहारी मिश्र की रचना तत्कालीन संदर्भ से जुड़े होने के साथ ही समय-सापेक्ष महत्व भी रखती हैं। यही कारण है कि समय जैसे-जैसे आगे बढ़ता है,उनकी रचना की धार बढ़ती जाती है। देश में व्याप्त कुर्सी की लोलुपता, राजनीति में बल-दंभ-छद्म का गठजोड़,सांप्रदायिक हिंसा, हत्या और बलात्कार की दिन-प्रतिदिन बढ़ती घटनाएँ, छद्म राष्ट्रवाद की अतिशयता, अलगाववादी ताकतों की चरम पराकाष्ठा, अंधश्रद्धा में लीन ग्रेजुएटों की लाचार भीड़, पाखंड और अंधविश्वास की आँच पर रोटी सेंकते धर्मगुरु तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, पानी तथा रोटी जैसे मूलभूत मुद्दों से इतर गैरजरुरी मुद्दों के लिए बहस की बढ़ती प्रवृति को देखते हुये रचनाकार का यह कटाक्ष एकदम ठीक है कि-''देश के अधिकांश हिस्से में बेहया के जंगल उग आए हैं।'' यह जंगल धीरे-धीरे सबको लील रहा है और लोग बेखबर बने हैं। लेखक केवल समस्या को उठाते ही नहीं बल्कि उसके दूरगामी कुपरिणाम से भी सचेत करते हैं। वे जानते हैं कि यह मूक हो जाने की प्रवृति और अनैतिकता का उत्साहवर्धन निकट भविष्य में लोकतान्त्रिक संभावनाओं की दीवार को और भी कमजोर कर देगा। वे लिखते हैं-'बेहया का जंगल इतना सघन हो जाएगा फिर उसका उच्छेद कठिन हो जाएगा।' यह कठिनाई आज फिर से समूचे विश्व को प्रभावित कर रही है। विश्व के महान लोकतान्त्रिक और समाजवादी राष्ट्रों में पनपती तानाशाही होड़ और पूँजी के आधार पर किसी व्यक्ति, देश या विचार की बढ़ती प्रवृति लेखक की इसी आशंका का परिणाम है। शिल्पगत दृष्टिकोण से देखा जाए तो बलिया की भोजपुरी मिठास के साथ देशी तंज इतने गहन विषय को भी रोचक और सरस बना देता है। बेहया चाहे जितना ही शुष्क, नीरस और अनुपयोगी क्यों न हो, उसमे निहित विचार, संदेश और प्रतिक्रिया लेखक की कवित्वपूर्ण, लालित्यमय और लाक्षणिक भाषा-शैली के प्रभाव से सहज व ग्राह्य बन गई है।

कुंदन कुमार रविदास
कनिष्ठ अनुवादक

एक अविस्मरणीय यात्रा-वृतांत

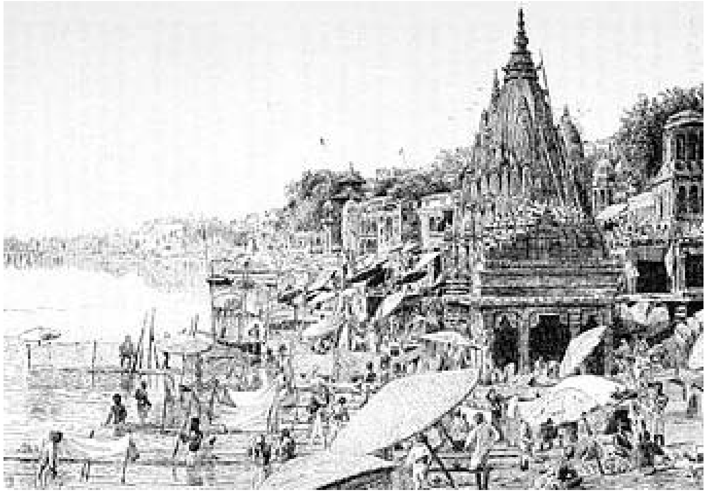

हमारा देश आश्चर्यो से परिपूर्ण हैं। यहाँ के सभी राज्यों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। इन सभी की यात्रा करके एक जैसा अनुभव नहीं होता। उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम की यात्रा के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि हमने विश्व-भ्रमण कर लिया। शायद यही कारण है कि इसे भारतीय उपमहाद्वीप के नाम से भी जाना जाता है। विविधता से परिपूर्ण इस देश का एक महत्वपूर्ण शहर है-लखनऊ। उत्तर भारत में स्थित लखनऊ नवाबों के शहर के तौर पर विख्यात है। मध्यकालीन नवाबों के ठाठ और तहजीब का अनूठा उदाहरण है यह शहर। सौभाग्य से नौकरी से संबन्धित एक प्रशिक्षण के सिलसिले में मेरा वहाँ जाना हुआ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में मेरा आरंभिक प्रशिक्षण शुरु हुआ। विभिन्न राज्यों के अन्य प्रशिक्षुओं से मेरा परिचय हुआ तथा उनमें से काफी लोगों से मेरी मित्रता भी हो गयी। प्रशिक्षण अवधि के बीच तीन दिन के अवकाश होने के कारण हम सब ने मिलकर वाराणसी भ्रमण करने की योजना बना डाली। हमनें एक बस किराए पर ली तथा अपने होटल से वाराणसी की ओर कूच कर गए। बस में बिहार, पंजाब, राजस्थान,गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, दिल्ली तथा अन्य राज्यों के साथी भी उपस्थित थें तथा बस में अपनी-अपनी भाषा के गीतों पर नृत्य कर रहे थे। पूरे बस में उल्लास का माहौल था,ऐसा लग रहा था कि यह बस अपने आप में भारतवर्ष की झांकी हो।

करीब पाँच घंटो के सफर के उपरांत हम वाराणसी से सटे सारनाथ की बौद्ध-भूमि पर पहुँच चुके थे। सारनाथ पहुँचते ही हमने सर्वप्रथम प्रसिद्ध गौतम बुद्ध के शिलालेख के दर्शन किए जो कि बहुत भव्य था। उसके बाद हम सारनाथ के इर्द-गिर्द स्मरणीय स्थलों के भ्रमण के लिए निकल पड़े। सारनाथ का सांची स्तूप बहुत भव्य था। अवकाश होने के कारण उस दिन बहुत भीड़ भी थी। स्तूप की भव्यता तथा वास्तुकला अद्‌वितीय थी। हम वहाँ बहुत देर तक रुके तथा महल की भव्यता का भरपूर आनंद लिया। तत्पश्चात हम वाराणसी की सीमा में प्रविष्ट हो गए । छोटे-बड़े मंदिरों से भरे इस शहर को देखकर यह कहना ठीक ही लगता है कि वाराणसी में प्रत्येक घर अपने आप में मंदिर है। संकरी और चौड़ी गलियों से गुजरते हुए हम जिस मोड़

पर पहुँचते, वहाँ एक मंदिर के दर्शन हो जाते और आश्चर्य की बात तो यह थी कि हर मंदिर का अपना इतिहास था और हर मंदिर के साथ कुछ किवदंतियाँ जुड़ी हुई थी। संक्षेप में सबको जानते-सुनते हम काशी विश्वनाथ मंदिर पहुँच गए। भगवान शिव की आराधना के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध यह केंद्रीय मंदिर है। हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं से भरे मंदिर के अहाते में बहुत मुश्किल से पहुँच पाये। लेकिन मंदिर के भीतर पहुँचते ही अलौकिक वातावरण से मन रोमांचित हो उठा और यहाँ तक पहुँचने के क्रम में उठाये गए मुश्किलों का बोझ पलक झपकते ही गायब हो गया। भगवान शिव को प्रणाम करने के बाद हमने मंदिर के प्रांगण और मंदिर के प्रत्येक भाग के दर्शन किए। दीवारों पर की गई कलाकारी और नक्काशी खुद-ब-खुद इसकी प्राचीनता और ऐतिहासिकता की गवाही दे रही थी। इस मंदिर ने मन को जैसे बाँध लिया था, जाने की इच्छा नहीं हो रही थी । इसके बावजूद हम सबने अपने कदमों को आगे बढ़ाया और मानस मंदिर, दुर्गा कुंड आदि मंदिरों के दर्शन किए। सुखद यादगार के रुप में सभी मंदिरों के सामने हमने बहुत सारी तस्वीरें भी ली।

वाराणसी की हमारी यात्रा यहीं समाप्त होने वाली नहीं थी। इस पावन- स्थली की महत्ता जितनी मंदिरो के कारण है उतनी ही यहाँ के घाटो के कारण भी है। गंगा के पावन तट पर कुल सत्तासी घाट हैं। अत: इन घाटों का अवलोकन किए बगैर यहाँ से जाना मुश्किल था। सबसे पहले हम काशी के प्रसिद्ध अस्सी घाट पर पहुँचे। यह वही घाट है जहाँ हिन्दी के महाकवि तुलसीदास ने अपना अंतिम समय बिताया और प्राण-त्याग किया। साहित्यिक और राजनैतिक गलियारों में जितनी ज्यादा इस घाट की चर्चा रही है, आँखों के सामने इसे देखकर मन के सारे भ्रम समाप्त हो हए। इसके बाद हम दशाश्वमेध घाट गए, जहाँ लोगों का हुजूम उमड़ा हुआ था। गेरूआ और सफेद वस्त्रों से सुसज्जित पुरोहित, साधु और संत को देखकर पूरा माहौल ही आध्यात्मिक लगने लगा। पूछने पर पता चला कि वृहद स्तर पर होने वाली गंगा-आरती की तैयारी चल रही है और कुछ ही देर में राजनैतिक हलकों से भी बड़े लोग पहुँचने वाले हैं। अत:जल्दी से इस घाट के सौंदर्य को निहार कर हमने अपना रुख एक और महत्वपूर्ण घाट की और किया। हम मणिकर्णिका घाट पहुँच चुके थे। यहाँ पहुँचते ही वातावरण एक अजीब सा अनुभव कराने लगा। भारी भीड़ के बावजूद एक एकाकीपन के एहसास ने घेर लिया। यह घाट महाशमशान के रुप में भी जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ पिछले

2500 वर्ष से बिना बुझे चिताएँ अहिर्निष जल रही हैं। यहाँ आकर अनुभव हुआ कि जिंदगी का आखिरी पड़ाव यही है। ऊँचाई तक उठते लपटों के बीच आसपास से आ रहे मंत्रोच्चार की ध्वनि हमारी अंतरात्मा का साक्षात्कार एक अलग ही लोक से करा रही थी। वहाँ से निकलने के पश्चात हमारी यात्रा का अंतिम पड़ाव वृन्दावन गार्डेन था। जब हम वृन्दावन गार्डेन पहुँचे तो सूर्यास्त का समय हो चुका था। अस्तचलगामी सूर्य की रौशनी से वहाँ का दृश्य अत्यंत मनमोहक लग रहा था। वहाँ के कृत्रिम झरने तथा प्रकाश-सज्जा सुंदरता में चार-चाँद लगा रहे थें । सभी ये कल्पना कर रहे थे कि यह यात्रा कभी समाप्त न हो। वृन्दावन गार्डेन से निकलने के पश्चात ही हमारी इस मनोरम यात्रा का अंत हो गया। उसके बाद हम सभी बस में सवार हुए तथा लखनऊ की ओर रवाना हो गए। इसके पश्चात हमारा प्रशिक्षण समाप्त हुआ तथा हम सभी मित्र विभिन्न शहरों में तैनाती के लिए रवाना हो गए। पर आज भी हम सभी इस यात्रा को स्मरण करते हैं तो हमारी अंतरात्मा रोमांचित हो जाती हैं।

आनंद कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

सुनहरे पल

बड़ा सुनहरा था वह बचपन का पल
हर पल खुशी हर पल मन चंचल
ना कोई गम है न कोई खुशी
बस मन था हर पल चंचल
आसमान को देखकर उसे
छूने की थी चाह!
बड़ा सुनहरा था वह बचपन का पल
ना कोई सोच ना कोई समझ
ना था कोई चिंता फिक्र ना
ही थी जिम्मेदारियों का पल
हर पल था मन चंचल
हर पल था सुनहरा पल
माता पिता का था प्यार
घर में था खूब सारा दुलार
बचपन बहुत था प्यारा
हर कोई की आँखों के थे हम तारा
वह बचपन का प्यार
वह अपनों का दुलार
वह माता पिता की फटकार
बड़ा सुनहरा था वह संसार
हर पल खुशी हर पल अपनों का प्यार
नटखट आवाज जब कुछ निकलता था
उससे पहले हर दंगल पूरा होता था
बड़ा सुनहरा था वह बचपन का पल
हर पल खुशी हर पल मन चंचल

वह बचपन की नादानियां
वह माँ का प्यार
वह भाई का दुलार
बड़ा सुनहरा था वह बचपन का संसार
हर पल खुशी हर पल अपनों का प्यार
वह बचपन की तोतली आवाज जब
निकलती सारे अपने पास होते थे
बिन मांगे ही सारे सपने अपने होते थे
वह बचपन का प्यार वह पिता का दुलार
वह भाई की फटकार बड़ी याद आती है
वह बचपन का सुनहरा संसार
हर पल खुशी हर पल प्यार
बड़ा सुनहरा था वह बचपन का पल
ना कोई गम न कोई खुशी
हर पल था मन चंचल

पंकज कुमार गुप्ता
डी.ई.ओ

बचपन की यादें

मेरी आँखों से गुजरी जो
बीते लम्हों की परछाईं
न फिर रोके रुकी ये आँखें
झट से भर आयीं।
वो बचपन गुजरा था जो
घर के आँगन में लुढ़कता सा
मैं भीगा करता था जिसमें
वो सावन बरसता सा,
याद आयी मुझे
माँ ने थी जो कभी लोरियां गायी
न फिर रोके रुक सकी ये आँखें
झट से भर आयीं।
उम्र छोटी थी पर सपने
बड़े हम देखा करते थे
ये दुनियाँ प्यारी न थी
हम तो बस खिलौनो पे मरते थे
जब देखा मैंने वो बचपन का खजाना
किताब, कलम और स्याही
न फिर रोके रुक सकी ये आँखें
झट से भर आयीं।
याद आया मुझे
भाई बहनों के संग झगड़ना
शैतानियाँ कर के माँ के
दामन से जा लिपटना,

साथ ही याद आई वो बातें
जो माँ ने थी समझाई
ना फिर रोके रुकी ये आँखें
झट से भर आयीं।
आज तन्हाई में जब
वे मासूम बचपन नजर आया है
ऐसा लगता है जैसे
खुशियों में कोई गीत गुनगुनाया है,
पर जब दिखा सच्चाई का आईना
तो फिर हुई रुसवाई
ना फिर रोके रुक सकी ये आँखें
झट से भर आयीं।

राजेश कुमार
डी.ई.ओ

चलते जाना है

नई राह की नई डगर में बस चलते जाना है।
नई उमंग, और नई तरंग से बस चलते जाना है।
हर राह हमारी मंज़िल है, हर वक्त हमारा रास्ता है।
उसी राह और उसी वक्त से चलते जाता है।

हम सोचते हैं जो कुछ शायद ही हम उसे कर पाये।
पर वक्त हमारे साथ नहीं वक्त हमारे साथ नहीं....
जो सोचा है उसे पाना होगा वक्त के साथ टकराना होगा।

वक्त तो हमसे रुठा होगा, हमें उस वक्त को मनाना होगा।
इंसान हूँ मैं अपने जीवन में जो खोया है उसे पाना है।
वक्त हमारे साथ नहीं फिर भी नहीं हमें घबराना है।
वक्त का पहिया ऐसा है फिर घूम के उसे आना होगा।
जो वक्त कल बीत गया उसी को फिर से बताना होगा।
नई सोच और नई तरंग से हमे हर शाम सजाना होगा।
जो कुछ खोया मैंने अपने जीवन में उसे पाने के लिए,
फिर वक्त से हमे टकराना होगा।
कर्म हमारे नई राह दिखाते हैं, वक्त तो सिर्फ बहाना है।
चाहे जो कुछ भी हो वक्त को घूमकर वापस आना होगा।
जीवन की जोत जलाने के लिए हर राह में मुस्कुराना होगा।
न चाहते हुए भी हमें वक्त से टकराना होगा।
तो मत घबराओ प्यारो।
बस नई राह की नई डगर में बस चलते जाना है।
बस नई उमंग और नई तरंग से बस चलते जाना है।

अमित कुमार
लेखाकार

फितूर-ए-इश्क

''भाई मुझे उस लड़की से सच्चा प्यार हो गया है।'' अभिषेक के मुंह से यह बात सुनकर मुझे कोई अचरज नहीं हुआ। पिछले 6 महीने में, यह तीसरी बार था जब अपने मुखारबिंद से उसने यह बात निकाली थी। मेरे मन-मस्तिष्क में इतना कौतूहल अवश्य था कि ये लड़की कौन सी लड़की हो सकती हैं। काफी देर सोचने के बाद जब मैं किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँचा तो मैंने मन ही मन खुद को कहा, ''खैर मुझे क्या? मैं क्यों अपने दिमाग के घोड़े दौड़ा रहा हूँ?'' अखिर अभिषेक द्वारा ऐसा कुछ कहना मेरे लिए कोई नयी बात थोड़े ही थी, मैं इस दुविधा से जूझ ही रहा था कि अभिषेक ने मेरे शरीर को हिलाते हुए मुझे टोका, ''प्रणव क्या हुआ? मैंने अभी-अभी तुम्हें कुछ बताया है और तुम्हे तो जैसे कोई परवाह ही नहीं। तुम्हारा क्या कहना है इस मामले में?'' मैंने अभिषेक को झिड़कते हुए कहा, ''यार तुम अब बस भी करो। ये सब बातें स्कूल और कॉलेजों में अच्छी लगती थी। हमें कॉलेज से निकले एक साल हो गए। आखिर तुम्हारे अंदर से ये इश्क का फितूर कब निकलेगा।'' इतना सुनते ही मानो उसे जोर का झटका लगा, ''क्या ! एक साल हो गए हमें कॉलेज से पास -आउट हुए।''ऐसा लग रहा था कि मानो वह कोई दिवास्वप्न में खोया हुआ था और मैंने उसकी निद्रा तोड़ दी हो।

मेरा मित्र अभिषेक व्यक्तित्व के दृष्टिकोण से मेरे बिलकुल विपरीत है। वो अत्यंत भावुक और स्वच्छंद स्वभाव का है। लोगों से घुलने मिलने में उसे ज्यादा समय नहीं लगता जबकि मुझे काफी समय लगता है, कभी कभी तो मुझे खुद से शिकायत होती है कि मैं इतना गंभीर क्यों हूँ? मैं अभिषेक की तरह क्यों नहीं हो सकता? हालांकि मुझे उसका अपने करियर के प्रति बेपरवाह होना बिल्कुल भी पसंद नहीं है। मेरे झिड़कने के बाद भी वो ज्यादा देर तक यथार्थ के धरातल पर न टिक सका। अपने सपनों के दुनिया मे उड़ान भरते हुए उसने कहा, फिर भी यार एक ही साल तो हुए हैं, अभी तो तमाम उम्र पड़ी है दुनिया की मुसीबतों मे पड़ने के लिए। फिलहाल तो मुझे नीरजा के अलावा कुछ सूझ नहीं रहा है। ऐसा लग रहा है कि पूरी

दुनिया झूठ है और एक नीरजा ही सच है।'' उसकी इन बचकानी बातों को सुनकर मेरा जोर से अट्टहास करने का मन हुआ, परंतु जब मैंने उसके चेहरे पर गंभीरता के भाव देखे तो मैंने अपनी भावनाओं को काबू कर लिया। अब मुझे उसकी चिंता सताने लगी, न केवल इसलिए कि वह अपने करियर के प्रति सजग नहीं था बल्कि इसलिए भी कि अगर उस लड़की ने अभिषेक के अविवेकी स्वभाव के कारण प्रेम प्रस्ताव ठुकरा दिया तो वो अपना गम साझा करने के लिए मुझे ही चुनेगा। इस दौरान उसे संभालना बड़ा मुश्किल होता है। ऐसा पहले भी हो चुका है। अमूमन सामान्य होने में उसे एक महीने का समय तो लग ही जाता हैं। सच कहूँ तो अब मैं फिर से ये सब झेलना नहीं चाहता।

अभिषेक को गंभीर मुद्रा में देखकर मैंने उससे कहा, ''यार ऐसा कुछ नहीं है। तुम बड़े फिल्मी किस्म के हो। पहले अपना करियर सेट कर लो। फिर प्यार में पड़ने के लिए तो सारी उम्र पड़ी है।'' मेरी बातों का उस पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा, झिड़कते हुए उसने कहा, ''यार प्रणव! तुम तो रहने ही दो। तुम्हें ये सब समझ नहीं आनेवाला। किताबों के बाहर भी एक दुनिया होती है। कभी फुर्सत मिले तो देखना कितनी हसीन हैं। अच्छा अब मैं चलता हूँ।'' यह कहकर उसने मुझसे विदा ली। अब मैं डूब गया कि मेरा मित्र अपने भविष्य को लेकर सजग क्यों नहीं है? मैं अपने परम मित्र को जीवन के इस मोड़ पर विफलता की ओर अग्रसित होते हुए देख रहा था। मेरे तकरीबन सभी मित्र या तो किसी सरकारी सेवा, बहुराष्ट्रीय संस्था में तैनात थे या किसी प्रतियोगी परीक्षा को उत्तीर्ण कर चुके थे। मैं भी ऐसा ही एक प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण कर तैनाती के लिए बुलावा पत्र की प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे डर था कि सभी मित्रों के शहर से पलायन करने के पश्चात् अभिषेक कहीं अकेला न पड़ जाए। फिर मुझे विचार आया कि शायद मैं अपने मित्र के बारे मे ज्यादा ही नकारात्मक विचार अपने मन में ला रहा हूँ। सफल होने का कोई निश्चित मार्ग नहीं होता। सफलता के मायने सभी के लिए भिन्न होते हैं। मुझे उसकी भावनाओं की कद्र करनी चाहिए, बजाए अपने आदर्श उसपे थोपने के। हमारे मित्र मंडली में वह सबसे ज्यादा खुशमिजाज है। अगर खुशी का कोई पैमाना होता तो यकीनन अभिषेक का वजन सबसे ज्यादा होता।

बहरहाल, उस दिन मुझसे विदा लेने के पश्चात मेरी अभिषेक से बात नहीं हुई। इसलिए नहीं कि वो मेरे विचारों से इत्तेफाक नहीं रखता था और मैंने इसलिए नहीं की क्योंकि मुझे उसकी भावातिरेकता कतई बर्दाश्त नहीं थी। दिन बीतते गए, दिन हफ्तों में बदल गए और हफ्ते पूरे महीने में। हमने इतने दिन तक कभी एक दूसरे को नजरअंदाज नहीं किया था। अब तक मैं ये समझ चुका था कि अभिषेक के प्रणय निवेदन को

ठुकराया जा चुका है। कुछ ही दिनों पहले मुझे पता लगा था कि नीरजा उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने वाली थी। मुमकिन है की वो इसके पश्चात् वहीं बस जाये। मुझे पूरी उम्मीद थी कि मेरा मित्र पूरी परिपक्वता से नीरजा के इस निर्णय का सम्मान करेगा। पर फिर भी उसे फोन कर के सांत्वना देने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

फिर एक दिन अचानक अभिषेक मेरे घर पर आ धमका। मैंने उससे पूछा, ''भाई सब ठीक तो है?'' अपने चिर परिचित अंदाज में खिलखिलाते हुए उसने कहा, '' इस बार मेरे भाई को वाकई में सच्चा वाला प्यार हो गया है।'' उसकी ये बात सुनकर मैंने राहत की सांस ली और मन ही मन कहा, ''चलो सब कुछ सामान्य है।''

अतुल कुमार
लेखाकार

अग्नि-शुद्धि

ड्रॉइंग रुम में सफेद फूल और मालाओं से सज्जित तस्वीर पर चन्दन-चर्चित और लाल सिंदूर से शोभित पुष्पा, जिनका श्राद्धकर्म कल ही खत्म हुआ था। आज सोमवार, सप्ताह की शुरुआत, इसलिए आत्मजन और मित्रजन कल ही श्रद्धा सुमन अर्पित कर वापस चले गए थें, घर में सिर्फ एकलौते पुत्र,पुत्रवधू और उनका एक लड़का। दूसरे दिनों की तरह आज भी सुबह उठकर सुशोभन ड्रॉइंग रुम में आकर बैठा, दृष्टि पुष्पा के तस्वीर पर थी। इतनी जल्दी क्यों चली गयी पुष्पा हमें छोड़कर? जिंदगी भर पति और संतान के पालन,घर गृहस्थी चलाने और इतने बड़े मकान की देखभाल करने के बाद अब जाकर कुछ समय मिला था आराम करने का। पुत्रवधु जो आ गयी थी। सुशोभन को भी नौकरी से सेवानिवृत्ति मिल गयी थी। कितने अरमान थें, तीर्थयात्रा पर चलेंगे पर अचानक एक रात में सबकुछ उलट-पलट गया। डॉक्टर भी कुछ नहीं कर पाये,''मैसिव हार्ट अटैक'' , यही कहना था उनलोगों का।

पुत्रवधू स्नेहा थोड़ी ही देर में चाय का प्याला लेकर हाजिर हो गयी ससुरजी के पास। बोली, ''बाबूजी, आज नाश्ते में क्या लेंगे ? तबीयत तो ठीक है? दही चुड़ा दे दूं? आज कुछ हल्का खाना ही बेहतर है, गर्मी बहुत ज्यादा हो रही है।'' आजकल स्नेहा बहुत ही ज्यादा देखभाल कर रही है। शायद सुशोभन को पुष्पा की कमी महसूस न हो इसलिए।

डोरबेल बजने लगी। स्नेहा आगे बढ़ी, पर सुशीतल, जो कि सुशोभन का एकमात्र बेटा है, ने दरवाजा खोला। एक औरत खड़ी थी। उसके बाल सफेद थे और वो सफेद कपड़े पहने हुए थी। दरवाजा खुलते ही औरत ने पूछा, ''सुशोभन दत्ता जी है क्या?'' फिर उनकी दृष्टि सुशोभन पर पड़ी तो उन्होंने स्वयं ही अंदर आकर पूछा, ''पहचाना?'' कल के अखबार में पुष्पा के निधन की खबर पढ़ी, साथ में तुम्हारा पता भी था। सुशोभन ने रुँधे हुए गले से पूछा ''नंदिनी दीदी? इतने बरसों बाद कैसे आयीं आप?'' उन्होने जवाब दिया,

''कल रात को ही मालदा से बस पकड़ी और अभी अभी पहुँची हूँ।'' पर मुझे कुछ विश्राम की जरुरत है,शाम को आकर सारी बातें करुँगी। ''कोलकाता में मेरा एक फ्लैट है, अब वहाँ जा रही हूँ। किसी को बोलने का कुछ मौका न देकर वो अचानक ही निकल गया। उनके जाते ही सुशोभन ने पूछा, ''पिताजी ये कौन थी?''

नंदिनी दीदी को देखकर ही सारी पुरानी बातें याद आने लगी। भूमि राजस्व विभाग में नौकरी पाकर सुशोभन को पहली पोस्टिगं मिला था बालुरघाट में मिली थी। वहीं परिचय हुआ था मानस से। मानस कर्मकार, एक प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक था। समान उम्र का होने के कारण मानस से गहरी दोस्ती बनी थी सुशोभन की। अच्छी नौकरी में होने के कारण मानस को घर में सभी लोग ज्यादा इज्जत देते थे। नंदिनी दीदी मानस की बड़ी बहन थी।

ऑफिस से लौटकर दोनों मित्र का ज्यादातर समय एक साथ बीतता था। दोनों आपस में अपना सुख दुख बांटते थे। दोनों की उम्र विवाह की हो चली थी। सुशोभन का परिवार उसके लिए एक सुयोग्य कन्या की तलाश कर रहा था। इसी बीच अचानक एक दिन मानस ने कमला से सुशोभन का परिचय करवाया। कमला दिखने में सुंदर थी, उसकी आवाज मधुर थी तथा वो हमेशा सजी धजी रहती थी। वह और मानस एक साथ ही विद्यालय में शिक्षक थें। कभी कभी वे तीनों मिलकर बालुरघाट के आस पास घूमने चले जाते थे। मानस कमला को बहुत पसंद करता था।

इसी बीच सुशोभन का तबादला कोलकाता में हो गया। परिवार के लोग बहुत ही खुश थे। वे जल्द से जल्द उसकी शादी कर देना चाहते थे। मानस से सुशोभन का पत्राचार चलता रहता था। इसी बीच अचानक एक दिन मानस कोलकाता आया । शुष्क,मुरझाया हुआ चेहरा, शरीर से कमजोर लग रहा था। सुशोभन ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, ''क्या हुआ तुम्हें?'', मानस ने जवाब में कहा कि कमला उससे जुदा हो चुकी है। उसने एक धनी परिवार में शादी कर ली। उसका पति अमरीका में रहता है। शादी के बाद वो वहीं जा बसी है। मानस की गलती यह थी कि उसने कमला से शादी के लिए कुछ वर्षों का समय मांगा था, वो अपनी दीदी की शादी पहले कराना चाहता था। बाद में नंदिनी दीदी की शादी तो मालदा जिले में हो गयी, किन्तु कमला इतने दिन तक संयम नहीं रख पायी। उसके बाद मानस की जिंदगी में अंधेरा छा गया, लोगों ने पुरानी बातें भूलकर कोई अच्छी लड़की देखने की उसे सलाह दी, पर मानस सबकुछ अनसुनी कर देता था।

इधर सुशोभन की शादी पुष्पा से तय हो गयी। बहुत अनुरोध करने के बाद मानस शादी के बहुभोज मे आया। पुष्पा बहुत ही धीर और नम्र स्वभाव की थी। उसकी बड़ी बड़ी आँखें बहुत ही मनमोहक थी। वो सबको

एक ही नजर में भा गयी थी। उस रात मानस ने पुष्पा के समक्ष ही सुशोभन से कहा कि वो पुष्पा जैसी ही किसी लड़की से विवाह करेगा। सुशोभन ने भी ऐसे ही कहा की सौंदर्य विभिन्न प्रकार के होते हैं। किसी के स्वभाव में भी एक विशेष प्रकार का सौंदर्य होता है। दोस्त होने के नाते सुशोभन भी कुछ कह नहीं पाया। इस विवाह के बाद मानस का सुशोभन के घर में आना काफी बढ़ गया। कारण-अकारण ही मानस कोलकाता आने लगा। कभी कभी वो अपने साथ पुष्पा के लिए उपहार भी ले आता था। पुष्पा की घर गृहस्थी की प्रशंसा वो गाहे-बगाहे करता रहता था तथा वो सुशोभन को अक्सर कहता था कि वो कितना खुशनसीब है कि उसे पुष्पा जैसी पत्नी मिली। वो सुशोभन के घर में टंगी पुष्पा की तस्वीरों को ऐसे निहारता था जैसे वो किसी संग्रहालय की कलाकृति को निहार रहा हो। लेकिन सुशोभन निश्चिंत था कि मानस पुष्पा का बड़ा सम्मान करता था। उसने कभी कुछ घटिया बातें नहीं की थी पुष्पा के लिए तथा उसे स्पर्श करने का प्रयास भी नहीं किया था। पुष्पा-सुशोभन की एकात्मता जैसे जैसे बढ़ने लगी वैसे ही मानस उनसे दूर होता गया। मानस की शादी तय होने के बाद ये दूरी और बढ़ गयी। दोस्ती के नाते दोनों पति-पत्नी शादी में बालुरघाट पहुँचे भी थे। सुहागरात के अगले दिन जब नवविवाहित दुल्हन से पुष्पा की बात हुई तो उसने बताया। ''आपका नाम मेरे पतिदेव को बहुत ही पसंद है।" पुष्पा ने पूछा, ''क्यों?'' नयी दुल्हन ने जवाब दिया, ''कल रात को वो आपका नाम लेकर मुझे पुकार रहे थें।'' ये बात पुष्पा को बहुत ही बुरी लगी, उसने सुशोभन से सारी बात कह दी। पुष्पा के जीवन में सिर्फ सुशोभन के लिए जगह थी। सुशोभन को भी ये बात बहुत ही नागवार गुजरी । इसलिए वो अब मानस से कोइ संपर्क नहीं रखना चाहता था। उसने मानस से अपनी दोस्ती का अंत कर दिया।

पर अब पुष्पा इस दुनिया से विदा हो चुकी थी। अब आखिर नंदिनी दीदी क्या खबर लायी होगी? सारी दोपहर इसी चिंता में बीत गया। बहुत वर्ष हो चले थे मानस की कोई खबर मिले। शाम को काफी समय बाद नंदिनी दीदी आयी। सुशोभन तब अपने कमरे में ही था । स्नेहा उन्हे घर के अंदर लायी। नंदिनी दीदी की उम्र अब करीब 70 वर्ष की हो चली थी। चलने की गति अब धीमी हो गयी थी , बातें भी धीरे धीरे कर रही थी, '' तुम्हें कौतुहल हो रहा होगा कि मैं इतने दिनों बाद इतनी दूरी से यहाँ क्यों आयी हूँ ? मैं यहाँ अपने भाई की अंतिम इच्छा पूरी करने आयी हूँ। तुम्हारी एक खोयी हुई चीज वापस करने आयी हूँ।"सुशोभन ने पूछा, ''अंतिम इच्छा? मानस कैसा है दीदी? ''चार साल हो गए मानस के गुजरे हुए।''दीदी ने कहा। उसका अंतिम समय बुरी अवस्था में बीता। मैं तो मालदा में रहती हूँ। कभी कभी उसका देखभाल करने आ जाया करती थी। उसकी तबीयत बदतर होती चली गयी डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। शरीर छोड़ने के

पहले उसने ये चीज मेरे हाथ में देकर बोला कि उसकी मौत के बाद यह तुम्हे सौंप दे। मैं मानस को लेकर इतनी चिंतित थी कि तुम्हारा पता ही नहीं पूछा। कल अखबार में जब शोक संदेश के कॉलम में पुष्पा के बारे में पढ़ा तो तुम्हारा पता मिला। मैं बिना गौर किए यहाँ आ गयी, अपने छोटे भाई की अंतिम इच्छा पूरी करने। दीदी के हाथ से सुशोभन ने लिफाफा लिया और पूछा, ''मानस की ऐसी हालत कैसे हो गयी थी? उसकी पत्नी कहाँ गयी? कोई संतान थी?''यह कहकर सुशोभन लिफाफा खोलने ही वाला था कि स्नेहा चाय लेकर आ गयी। सुशोभन ने लिफाफा बगल में रख दिया। '' पता नहीं उसमे से क्या निकलेगा?'' नंदिनी दीदी फिर बताने लगी,''शादी के बाद से ही पत्नी के साथ मानस का संबंध बिगड़ना शुरू हो गया। संतान होने के बाद भी दोनों में मेलजोल का बड़ा अभाव था। मैंने दोनों को बहुत समझाया, पर उसका कोई असर नहीं पड़ा, छोटी सी लड़की को लेकर बहू अपने मायके चली गयी और कभी वापस नहीं आई। उन लोगों के आपसी द्वंद के बारे में मुझे कुछ पता ही नहीं चला। पत्नी के चले जाने के बाद मानस अकेलेपन से ग्रसित हो चुका था। दिन भर सोया रहता। ''इतनी बात कहकर नंदिनी दीदी रूक गयी। बात करते करते उनका गला सूख चुका था। पानी पीने के बाद उन्होने चाय की भी चुस्की ली। इसी बीच सुशोभन ने लिफाफा खोला। आश्चर्य की बात यह थी कि पुष्पा के कमसिन उम्र की तस्वीर है। सुशोभन के साथ पुष्पा की जब शादी की बात चल रही थी, यह उस समय की तस्वीर है। यही तस्वीर पुष्पा के घर से शादी तय होने के समय आयी थी। कितना समय बीत चुका था सुशोभन को ये तस्वीर मिले। खुले बालों में सोलह साल की पुष्पा कि सरल दृष्टि कितनी आकर्षक थी। लेकिन यह तस्वीर तो उस समय सुशोभन एक कविता किताब के अंदर छुपा के रखता था। विवाह के बाद सुशोभन को इस तस्वीर की जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि पुष्पा उसकी जिंदगी में आ चुकी थी। लेकिन मानस को कैसे मिली ये तस्वीर? किसी तरह उसने ये तस्वीर चोरी कर ली होगी। इतना हीन कार्य क्यों किया मानस ने?

नंदिनी दीदी ने फिर से बोलना शुरू किया, ''यह फोटो मानस हमेशा अपने तकिये के नीचे रखता था। कभी सीने से लगाकर, तो कभी तकिये के नीचे। सुशोभन के आँखों में घृणा और ज्वलन की आग धधकने लगी। फिर नंदिनी दीदी ने कहा ''आज कोई नहीं रहा सुशोभन। संभव हो तो मेरे भाई को क्षमा कर देना। उसने अपनी जिंदगी तो बर्बाद कर ही ली। लेकिन कभी दोस्ती का वादा नहीं तोड़ा, कभी तुम्हें तकलीफ नहीं होने दी।''

बहुत समय बीत गया, नंदिनी दीदी जा चुकी थी। रात को सुशोभन ने अपने कमरे का दरवाजा बंद किया। ऐसे हीन कार्य के लिए उसे मानस को मरणोपरांत सजा देने की इच्छा हो रही थी। घृणा की आग में वो

खाक हुए जा रहा था। लेकिन पुष्पा की इज्जत कैसे बचाए? तस्वीर निकालकर सुशोभन सोचने लगा कि इसे सीने से लगा के रखता था मानस। बंधुपत्नी के साथ ऐसा व्यवहार? चक्कर आने लगा सुशोभन को, वो काँपने लगा। उसकी प्रियतमा पत्नी की तस्वीर दूसरे पुरूष के पास? छी! लेकिन पुष्पा तो निष्पाप, निर्दोष थी। अशोक वाटिका में सीता भी बंदिनी थी, राक्षसराज की लंका पुरी में, श्रीरामचंद्र जानते भी थे कि सीता जी पवित्र है एक देवी की भांति। फिर भी सीता माता को अग्निपरीक्षा देनी पड़ी अब पुष्पा को यह तस्वीर सीता जी की प्रतिभू बन गई। सुशोभन खुद को रोक न पाया, सागर की लहरों की तरह टूट पड़ा। कुछ समय बाद वह उठकर चलने लगा, घर के एक कोने में लगे देवस्थान की तरफ। वहीं पर बैठकर रोज पूजा करती थी पुष्पा। देवी देवताओं की मूर्ति और फोटो के साथ एक पीतल का दीया भी रखा था। सुशोभन ने दीप प्रज्ज्वलित किया। फिर गौर से एक बार पुष्पा की तस्वीर को देखा। अब दीप की शिखा पर वह तस्वीर को रखकर जलाने लगा। मरने के बाद भी अपनी पुष्पा को वो निष्कलंक रखना चाहता था। इसलिए यही है उसकी अग्निपरीक्षा।

तापसी आचार्य (बसाक)
सहायक लेखा अधिकारी

घर-घर की कहानी ''माँ-बाप की जुबानी''

समय-समय की बात है कभी माँ-बाप अपने बच्चे को बहुत ही प्यार से पालते हैं और कुछ समय बाद माँ-बाप बच्चे के ऊपर निर्भर हो जाते हैं। उस समय बच्चे माँ-बाप को पालने का नाटक करते है और एक समय ऐसा आ जाता है जब माँ-बाप को बच्चे दुतकारने लगते हैं। क्या यही जीवन का सार है... ? यह घटना (दृश्य) आज के युग के लिए एक नई सोच सी बन चुकी है। यह दृश्य आजकल लगभग सभी घरों में देखने को

मिलता है चाहे हिंदुस्तान हो या हिंदुस्तान के बाहर। यह सिर्फ हमारी सोच ही नहीं बल्कि हमारी जरुरत का भी आधार बन चुका है। जिस माँ-बाप ने हमें पाल-पोसकर बड़ा किया, हमें पढ़ाया-लिखाया, अपना सारा जीवन हम बच्चों के नाम कर दिया। अपनी हर खुशी को छोड़ हम बच्चों की खुशी के पीछे भागते रहे। अपनी सारी कमाई का अंश अपने बच्चों के पीछे न्योछावर कर दिया करते हैं। अपने बारे में सोचने तक की फुर्सत नहीं मिलती, वैसे माँ-बाप की आज के दिनों में कमी नहीं है जो खुद भूखे रहकर भी अपने बच्चों को पेट भर खाना खिलाते है। परंतु बदले में जब बच्चे पढ़-लिखकर बड़े हो जाते हैं तो माँ-बाप को क्या मिलता है-भूखे रहने की सजा, खाने-खाने को तरसना, घर से बाहर निकलने की सजा। बस इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ भी मान- सम्मान कमाया,धन - दौलत, रुपया-पैसा आदि सभी कुछ बच्चे उनसे छीन लेते है और ऐसा करके अपने- आप में बहुत ही गौरवान्वित होते हैं। यहाँ तक उनकी खुद की कमाई से बने घर-मकान से भी उन्हें बेदखल कर देते है। आज के युवाओं की नई पीढ़ी अपने माता पिता के साथ ऐसा ही व्यवहार कर रहे हैं। मैं जानता हूँ कि सभी इसी तरह की सोच नहीं रखते है फिर भी मैं आज के दिनों में लगभग ये देख रहा हूँ और आप लोग भी इन बातों से भलीभाँति परिचित होंगे। हो सकता है मैं गलत हूँ क्योंकि सभी लोग इस कदर हैवान नहीं होते कुछ तो बहुत ही अच्छे स्वभाव के होते हैं। फिर भी पता नहीं कि यह सोच आज के नौजवानों में कैसे प्रवेश कर गयी है ?

मैंने अपने जीवन में जो कुछ देखा है, आज आप सब के साथ साझा करने का प्रयास किया है। हम जैसे लोग ही हैं जो अपना सारा जीवन सिर्फ सोचने में गुजार देते हैं की क्या मैं जो कुछ कर रहा हूँ यह सही है या नहीं, आगे इसका परिणाम मुझे भी भुगतना पड़ सकता है। क्योंकि कहावत भी तो ऐसी है-जैसी करनी वैसी भरनी। सभी कोई सच जानते हुए भी इस तरह से अपने कर्तव्यों को छोड़ कर मूर्खता की हद को पार करने में

लगे रहते है। क्या जिस माँ-बाप ने अपने जीवन की सारी खुशियों को आपके नाम न्योछावर कर दिया, वैसे माँ-बाप के सपनों को पूरा करने का दायित्व हम बच्चों का नहीं है। हम लोग जानते हैं कि एक दिन हम लोग भी इसी तरह से बुढ़ापे की दौर से गुजरने वाले हैं तब क्या हमारे बेटा-बेटी इस तरह की सोच नहीं रखेंगे? सब कुछ जानते हुए भी हम लोग अनजान बनते है। इसका मतलब हम लोग पढ़-लिख कर भी मूर्ख बने हुए है।

सच कहूँ तो मैं भी अपने जीवन के इस पड़ाव से गुजर रहा था। अचानक मुझे भगवान की कृपा से कुछ दृश्य सामने आने लगे कि मैं जो अपने माँ-बाप के साथ हस तरह से दुर्व्यवहार कर रहा हूँ? क्या यह सही है? मेरा भी एक छोटा सा प्यारा सा बच्चा है। जिस तरह से मैं अपने छोटे से बच्चे के प्रति इतना प्रेम कर रहा हूँ कि मैं उसके बिना एक पल भी नहीं रह सकता तो सोचिए मेरे माँ-बाप जिसने मुझे 25 सालों से पाल-पोसकर बड़ा किया है आज वे लोग हमारे बिना किस तरह रहते होंगे? ये सब तो हमारे माँ-बाप द्वारा किए गए बलिदानों का नतीजा है कि आज मैं सफल हूँ परंतु क्या ये सफलता पूरी है? तब मुझे समझ में आने लगा कि ये सब तो दिखावे का जीवन है असली जीवन का आनंद तो माँ-बाप के चरणों में है। अब लगता है कि मैंने जो भी कुछ किया है, वह हमें पहले से ही करना चाहिए था।

अब जाकर मुझे यह एहसास हुआ कि जीवन के जीने का असली मजा तो परिवार वालों के साथ बिताए हुए पल है। इंसान को खुशी - खुशी कुबूल करना चाहिए कि रुपये - पैसे तो सिर्फ हाथों के मैल की तरह हैं, आज है-कल नहीं। माँ-बाप हमारे दिल के धड़कनों में बसे हुए हैं।

परंतु दर्द आज भी उतना ही है जितना कि पहले था। जो अपने माँ - बाप को दु:ख और दर्द भरे जीवन में चलने के लिए छोड़ दिए है चाहे वे जानबूझकर हो या अनजाने में। मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि हमलोगों ने माँ-बाप को कितना कष्ट दिया उसके बावजूद भी माँ-बाप की जुबान से सिर्फ और सिर्फ अपने बच्चों के प्रति प्रेम और उदारता ही झलकती हैं। उनका प्यार और स्नेह आज भी हमलोगों के साथ है।

इस बात को हमलोग जानते हुए भी गलतियों पर गलतियाँ करते जा रहे है। मैंने बारीकियों से देखा है कि परिवार में ये चीज आज के दिनों में बहुत ही आम है, न चाहते हुए भी अपने आप को माँ-बाप से दूर रखा जाता है क्योंकि उन्हें कभी - कभी ऐसा लगता है कि माँ-बाप तो पुराने ख्यालों के है वे हमारे इस स्टेटस को

देखकर क्या सोचेगें? वे हमारी लाईफ स्टाइल में कैसे घुल-मिल पाएंगे? 'मेरे माँ-बाप पुराने ख्याल के है।' लोगों से उन्हें कैसे मिलवाएगें, इस प्रकार की तमाम बातों को वो दिन रात सोचते रहते हैं और इस प्रकार अपने आप में एक गलत कदम उठा लेते है। जबकि वे भी इस बात को समझते है। परंतु मैं इन बातों को जब समझ सका तो एहसास हुआ कि माँ-बाप को समझने के लिए रुपये-पैसे की जरुरत नहीं है बल्कि एक सच्चे मन की है क्योंकि अगर आज माँ-बाप हमारे बारे में भी इस तरह से सोचते तो हमलोग आज इस ऊँचाई तक कभी नहीं पहुँच पाते। इसका श्रेय हमारे माँ-बाप को ही जाता है। आज जो कुछ भी है सिर्फ और सिर्फ उनकी ही बदौलत।

लेकिन यह सब बाते हमारे दिलों-दिमाग में तो है परंतु इस नए जमाने के नए रिवाज, स्टेटस, रुतबा, को बचाने के लिए, हम गुम से हो जाते है। यह एक बीमारी की तरह हमारे जीवन में बस चुका है।

हमलोग जानते हैं कि यह सारी घटना आज - हर घर - घर की कहानी बन चुकी है। जिसे लोग देख कर भी अनदेखा कर देते हैं। सच तो ये है कि लोग जितनी मोटी-मोटी किताबें पढ़ते हैं उतना ही उनमें ज्ञान की कमी होती जाती है। इन सच्चाईयों को सभी जानते है फिर भी किसी को कोई असर नहीं पड़ता। परंतु मैं आज आप लोगों से पूछता हूँ कि क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं है कि हम अपने माँ-बाप को हर वो खुशी दें जिसका उन्होंने सपना देखा था, जिस खुशी को उन्होंने हमलोंगो से पाने की उम्मीद रखी थी।

इंसान की इंसानियत ही बहुत कुछ बयान कर जाती है अगर कोई उससे कुछ सीखना चाहे तो यह नहीं देखा जाता है कि वो इंसान कितना बड़ा है या कितना छोटा है, ज्ञान का सार जहाँ से मिले उसे स्वीकार करना चाहिए। मैंने भी अपने जीवन में ज्ञान का सार, अपने बच्चे को देखने के बाद पाया ।

इस घर - घर की कहानी को हमें आज एकजुट होकर पूरे समाज से, पूरे देश से हटानी चाहिए । ताकि माँ-बाप अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपने बच्चों से भी उम्मीद रख सके, और जब मन में सोच अच्छी हो तो बुराई कभी प्रवेश ही नहीं कर सकती है। हमें अपने माँ-बाप की तरह ही अच्छी सोच रखनी चाहिए। ताकि इस घर-घर कहानी से पूर्ण रुप से निजात मिल सके।

अमित कुमार
लेखाकार

पत्र

लिख रहा हूँ मैं,
यह पत्र दूर से,
समझ पाओगी क्या,
मेरे इस पत्र की भाषा,
जमीन के इस छोर से,
पहुँच जाएगा, मेरा यह पत्र,
सुबह होने के पहले,
सूरज के दिखने से पहले,
पत्र खोलते ही जान जाओगी,
उसमें वही लिखा होगा जैसा तुमने सोचा था ।

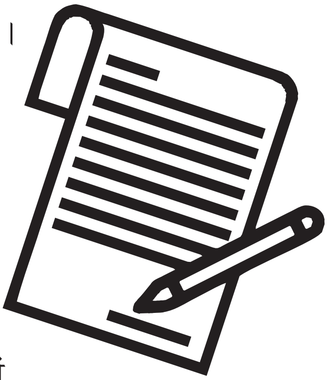

लिखा है कॉलेज से भागकर,
फिल्मे देखने जाना हमारा,
बरसात की उस शाम को,
भींगकर चहचहाना तुम्हारा,
फिर से उस दिन के सूरज का उगना,
उस सुनहरी, सुहावनी, चाँदनी, रात की बातें,
याद है ना, वो लम्हें वो बातें,
तुमने मुझसे क्या कहा था ?

पर अभी मैं बहुत दूर हूँ,
यही तो वजह है कि इस कोरे कागज में,
इस पत्र को लिख रहा हूँ,
लेकिन तुमने जैसा सोचा था,
बस वैसा - वैसा लिखा है।

विश्वजीत पाल
सहायक लेखा अधिकारी

मैं प्राचीन बरगद का पेड़ हूँ

बड़ी सड़क के पास अनेक शाखाएँ- प्रशाखाएँ
ले कर मैं अभी भी खड़ा हूँ।
मुझे याद नहीं है मैं कब से यहाँ पर हूँ।
तरह-तरह की चिड़ियों का बसेरा हूँ मैं,
गिलहरी का तो क्रीड़ा का मैदान हूँ मैं
और कुछ शांत उल्लू भी मुझे ही
अपना घर मानते है।
इन सबको साथ लेकर खुश ही तो हूँ मैं।
बड़े-बूढ़े मेरे छाँव में बैठकर
सुख- दुख की बातें करते।

छोटे-छोटे बच्चे खेलते और
लड़ते-झगड़ते फिर दोस्त बन जाते
महिलाएँ अपने संसार की बातें करती,
और मैं हूँ कि चुप-चाप उनकी
बातें सुनता रहता हूँ।
छिप-छिपाकर कभी मुस्कुराता
तो कभी रोता
ये सच है कि मैं बोल नहीं पाता,
पर सब-कुछ सहते हुए भी
ठीक ही तो हूँ मैं ।

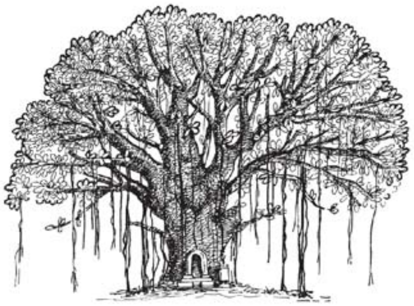

सालों से खड़ा होकर न जाने कितनी
घटनाओं का गवाह बनता आया हूँ मैं,
लेकिन जब मुझे पता चला कि
मेरी जरुरत अब खत्म हो गई है,
मेरी वजह से एक अच्छी जगह का
इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है।
यहाँ बहुत मकान बनेंगे,
जिनमे रहेंगे बहुत सारे लोग,
मुहल्ले का स्वरूप भी बदलेगा,
वैसे भी इस नए जमाने में
हम पुरानों को कौन पूछे !
मैं फलहीन, पुष्पविहीन, बेकार का पेड़।

बेबी पाल
वरिष्ठ लेखाकार

तबीयत

क्यों तबीयत ठहरती नहीं कहीं आजकल,
वक्त तो कट जाता है, पर गुजरता नहीं।
यूं शिवली के फूलों को उठाना तेरा
धड़कन रुक जाती हैं, पर पलक झपकती नहीं।
देखा दर्द-ए-दुख जो तेरा कि
बड़ी बेतबीयत से तू पड़ी है,
काश तू शिवली की भांति खिल जाती, लेकिन....
आँसू तो रुक जाते है, पर घुटन जाती नहीं।
यादें, पन्नों की तरह पलटने लगी
तेरी तबीयत, मन की तबीयत को बदलने लगी।
चुनता हूँ शिवली के फूल इस कदर
कि काश तू उठ जाती, बड़े तबीयत से।

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

अनुभूति

तुम्हारी नन्ही मुट्ठी में है
मेरी खुशियों की चाबी

तुम्हारी नन्ही उँगलियाँ
जो थाम रखी हैं मेरी तर्जनी
वहीं से खुशियों का एक ज्वार फूट
मेरी धमनियों से बहकर
तृप्त करता है
मेरे क्लान्त हृदय को

मैं एकटक निहारती रहती हूँ
तुम्हारी निष्कलुष निद्रा को
और साक्षी बनती हूँ
उस दिव्य क्षण की
जब गहन निद्रा में
अनायास तुम हँस पड़ते हो।

सुस्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ

Acknowledgement is awaited	पावती की प्रतीक्षा है।
Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान कर दिया जाए।
Attached herewith	इसके साथ संलग्न।
Balance at credit	जमाखाते शेष।
Bring into notice	ध्यान में लाना।
Consolidation of pension	पेंशन का समेकन।
Damage claim	नुकसानी दावा।
Delay in disposal	निपटान में देरी।
Eligible candidate	पात्र उम्मीदवार।
File an appeal	अपील फाइल करना।
For orders	आदेशार्थ।
Forwarding letter	अग्रेषण पत्र।
Governed by rules	नियमों द्वारा शासित।
Handwritten document	हस्तलिखित दस्तावेज।
Hereinafter	इसमें इसके पश्चात।
In consequence of	के परिणामस्वरूप।
Just below	ठीक नीचे।
Kindly expedite disposal	कृपया शीघ्र निपटान करें।
Leave not earned	अनर्जित छुट्टी।
May be permitted	अनुमति दी जाए।
Non compliance	अपालन।
On due date	नियत तारीख को।
Pending adjustment	समायोजन होने तक।
Quote reference	संदर्भ बताएं।
Remain in force	लागू रहना।

जितेन्द्र शर्मा
वरिष्ठ लेखाकार

योग दिवस के अवसर पर योग करते अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

शिशु उत्सव के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कार्यालयी कर्मचारियों के बच्चे।

शिशु उत्सव के अवसर पर चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए
प्रधान महालेखाकार श्री एम. एस. सुब्रह्मण्यम।